

वर्ष : 2018-19



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आरोहण



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
गुजरात, अहमदाबाद



अहमदाबाद हेरिटेज वॉक

अहमदाबाद नगर निगम द्वारा लोगों को अहमदाबाद शहर के हृदय से परिचित करवाने के लिए एक हेरिटेज वॉक आयोजित की जाती है, जो प्रातः 7:45 बजे कालुपुर में स्थित स्वामिनारायण मंदिर से प्रारंभ होकर जुम्मा मस्जिद में प्रातः 10:30 बजे समाप्त होती है । इस वॉक में ढ़ाई घंटे में लगभग 20 स्थान सम्मिलित होते हैं । अहमदाबाद शहर की विशेषताओं में हैं यहाँ के असंख्य पोल जहाँ बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं । इनमें से कुछ तो एक छोटे से गाँव के समान हैं जिनमें पतली गलियाँ, चबूतरे, पक्षियों को दाना डालने का स्थान इत्यादि होते हैं । अहमदाबाद शहर की विशेषताओं में कई ऐतिहासिक सुंदर स्मारक भी हैं । पुराने अहमदाबाद शहर में, जहाँ ये स्थित हैं, पैदल चलते हुए यहाँ की कला, स्थापत्य, संस्कृति तथा परंपरा का जीवंत अनुभव किया जा सकता है ।



आरोहण

वर्ष : 2018-19

संरक्षक : श्री हिमांशु धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

श्रीमती प्रीति अब्राहम
प्रधान निदेशक

संपादक मंडल : श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अभिषेक पँवार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री रवीन्द्र सचान, लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती धनवंती टिब्बानी सिसोदिया,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री प्रशांत शुक्ला, लेखापरीक्षक

संपादन सहयोग :

श्री पवन सिंगला, हिंदी अधिकारी	श्रीमती राधा नायर, हिंदी अधिकारी
श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	सुश्री रीना अभ्यंकर, पर्यवेक्षक
श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	
श्रीमती बीना यादव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	
श्री चिटू गुप्ता, लिपिक	

संपादकीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), गुजरात एवं प्रधान निदेशक (केंद्रीय), अहमदाबाद, गुजरात के संयुक्त प्रकाशन 'आरोहण' का नवीनतम अंक (2018-19) प्रस्तुत करते हुए अति हर्ष का अनुभव हो रहा है। कार्यालयों के सदस्यों द्वारा लिखी गई रचनाओं, लेख व कविताओं के मोतियों को चुन कर इस माला में पिरोया गया है।

सही मायने में हिन्दी भाषा की उन्नति हो एवं हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन मिले, इस इरादे से आरोहण में केवल कार्यालय सदस्यों व उनके परिजनों द्वारा स्वरचित रचनाओं को ही सम्मिलित किया जा रहा है। इस प्रयास के समर्थन में कार्यालय सदस्यों ने एक दूसरे से प्रेरणा लेकर कुछ न कुछ सार्थक लिखने का प्रयास किया है। इसी कड़ी में मौलिक रचनाओं को संजोकर इस अंक को प्रकाशित किया गया है।

यात्रा वृत्तांत, मानवीय सम्बन्ध, वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, महिला सम्मान इत्यादि जैसे विषयों से युक्त इस अंक की सुवास आपके अन्तर्मन को महका देगी। ये रचनाएँ लेखकों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं और सहज भावों को प्रस्तुत करती हैं। हर एक रचना, लेख हो या कविता, किसी न किसी मानवीय भाव को कहने का सहज प्रयास है। कुछ रचनाएँ देश-दुनिया की जानकारी देती हैं तो कुछ रोचक संस्मरण हैं और कुछ रचनाएँ जीवन दर्शन प्रस्तुत करती हैं। एक छोटी सी बात कैसे हमारे मानसपटल पर अपनी छाप छोड़ जाती है और हमें कैसे सोचने पर मजबूर कर देती है, इसके कई उदाहरण इस पत्रिका में आपको पढ़ने को मिलेंगे।

वे सभी लोग बधाई के पात्र हैं जिनके संयुक्त प्रयासों से यह पत्रिका प्रकाशित हो रही है। हम उन सभी कार्यालयों का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने सतत हमारे प्रयासों को सराहा है और हमें प्रोत्साहित किया है। यह पत्रिका आपके जीवन में एक सकारात्मक दृष्टिकोण लाये, ऐसी आशा है।

संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
१.	नाम	श्री अभिषेक कुमार	कविता	१
२.	डिजिटल एकलव्य	श्री अभिषेक पँवार	कविता	२
३.	जिंदगी	सुश्री अनिता सिंह	कविता	३
४.	गर देश है महान तो	श्री अनिल कुमार बेनीवाल	कविता	४
५.	कार-नामा	श्री अनिल कुमार बेनीवाल	लेख	६
६.	पेड़ है तो जीवन है	श्री चिटू कुमार गुप्ता	लेख	१३
७.	सकारात्मक सोच	श्री छत्रपाल सिंह राठौर	लेख	१४
८.	न्यूयॉर्क में एक शाम	श्रीमती धनवंती टिब्बानी सिसोदिया	लेख	१६
९.	मेरे यू.एन. ऑडिट के संस्मरण	श्री प्रकाश महावर	लेख	१९
१०.	कोरा कागज़	श्री प्रदीप कुमार	कविता	२२
११.	गीता-जीवन दर्शन (मेरी दृष्टि में)	श्री प्रशांत शुक्ला	लेख	२३
१२.	यात्रा वृत्तान्त	श्री प्रवीण सिसोदिया	लेख	२७
१३.	जल संकट	श्री बिनय कुमार	लेख	३०
१४.	द बकेट लिस्ट	श्रीमती मोनिका दवे	लेख	३२
१५.	सुन	सुश्री याशिका सिंगला, सुपुत्री श्री पवन सिंगला	कविता	३६
१६.	बैंक समाधान विवरण	श्री राजीव कुमार गर्ग	लेख	३८
१७.	अदम्य क्षमता	श्री राजीव रंजन सिंह	लेख	४१
१८.	स्मृति	श्रीमती रीना अभ्यंकर	लेख	४३
१९.	प्यारी हिन्दी	श्रीमती रचना सिंह	कविता	४५
२०.	माँ	श्रीमती रञ्जीना मोरीसवाला	कविता	४६
२१.	कर्तव्य पथ पर	श्रीमती विनीता राजीव सिंह	लेख	४८

क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
२२.	महातीर्थ (सेल्युलर जेल)	श्रीमती विद्या अय्यर	लेख	५०
२३.	हमारे कार्यालय का “कलापर्व”	श्रीमती वीना यादव	लेख	५३
२४.	धर्म और हम	श्रीमती शालू गुलाटी	लेख	५६
२५.	वसुधैव कुटुंबकम्	श्री शिवानंद	लेख	५८
२६.	एक लम्हा जीने दो बस, तुम उनको सिर्फ अपने लिए	श्री सुनील कुमार छेडवाल	कविता	६१
२७.	जीवन क्या है	सुश्री सिमरन राठौर, सुपुत्री श्री छत्रपाल सिंह राठौर	लेख	६३
२८.	सिनेमाहॉल में राष्ट्रीयगान	श्री संदीप कुमार बाजपेई	लेख	६५
२९.	नैनीताल की यादें	श्री हिमांशु वर्मा	लेख	६९
३०.	अपेक्षा	श्री हिमांशु धर्मदर्शी	लेख	७३

नाम

अभिषेक कुमार

वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

मैं जानता हूँ मुझे एक नाम के कफ़न में कैद कर दोगे तुम,
किसी किताब के पन्नों के बीच उस नाम को दफ़न कर दोगे तुम।
भूले-बिसरे उस नाम पर कोई प्याली चाय की रख दे,
फिर दीमक भी तो भूख मिटायेंगे उस नाम से अपने।

नाम दे तो दोगे फिर उस पर भी नाम जोड़ोगे तुम,
इस तरह नाम जुड़ते जाएँगे और मैं बंटता जाऊँगा।
सब जगह मेरे नाम के चर्चे जो फैलाओगे तुम,
हर जगह मेरे नाम मुझसे पहले जाएंगे तो मैं कहाँ जाऊँगा।

वो घूम रहे हैं चाँद-सितारे, नाम तुमने दिए उन्हें भी
पर उस नाम से उन्हें बुलाओगे तो क्या वे चले आएंगे ?
वो मस्तमौला हैं, उन्हें नाम से क्या,
अपने वेग, अपनी गति से चलते जायेंगे।

नाम अनाम लिख दूँ तो मेरी पहचान बन जाएगी वो,
कुछ न बताया, तो नाम अनाम ही दोगे मुझे।
कितनों के नाम दर्ज किए तुमने, पर क्या वे वही थे ?
नाम दिया तुमने जो उन्हें, क्या उनके नाम वही थे ?

• • •

डिजिटल एकलव्य

अभिषेक पंवार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक मूरत जो खुद ही को गढ़ रही है,
न जाने क्यों, विस्मित सा कर रही है ।
लगता है एकलव्य बन रही है,
स्वप्न भव्य बुन रही है ।

पर एकलव्य ने किसी को गुरु तो माना था,
भले ही द्रोण इससे अनजाना था ।

कुछ नियम कायदा तो बनाया था,

कब क्या करना, खुद को सुझाया था ।

पर अजीब ही है आज का 'डिजिटल एकलव्य',

न जाने कहाँ है इसका गन्तव्य,

अंगूठे से लगा है 'मोबाइल धनुर्धारी',

मानो कर लेगा दुनिया मुठ्ठी में सारी ।

कृत्य अकृत्य के अंतर से अंजान,

मचा रहा है डिजिटल दुनिया में घमासान,

सीखना है तो खुला है 'वर्चुअल वर्ल्ड',

पर कुछ काम तो कर लो 'इन रियल वर्ल्ड' ।

मानव तो मानव ही है, भावनाओं से भरा हुआ,

कोई 'डिसलाइक' ना कर दे, इस बात से है वो डरा हुआ ।

एक वो था जो कर रहा था अंतर विकास,

एक ये है जो स्वयं ही हो रहा है ह्रास ।

यही समय है, कुछ नियम कायदे अपना लो,

सही समय है, अच्छी अपनी सोच बना लो,

वरना फिर से एक द्रोण आएगा, और

दक्षिणा में 'डिजिटल एकलव्य' तेरा अंगूठा ले जाएगा ।

• • •

जिंदगी...

अनिता सिंह

वरिष्ठ उप-महालेखाकार

आशा और निराशा, पाना और खोना,
रूठना और मनाना, हँसना और रोना,
मिल कर भी कहीं कुछ छूट सा जाना,
कितने ही पलों को पिरोये हुए एक माला सी है जिंदगी..

कभी चलकर रुकना, फिर रुकते हुये चल पड़ना,
ठोक़ों से संभलते हुये आगे बढ़ना,
कभी किसी मोड़ पर घना अंधेरा, तो कहीं रोशनी ही रोशनी,
हर मोड़ से गुज़रते हुये एक रास्ता सी है जिंदगी

कभी जीत कर हारना, तो कभी हारकर भी जीतना,
कभी निराशाओं के बादल, तो कभी आशा की धुंधली सी किरण,
कभी चाहतों के सिलसिले, तो कभी नफ़रतों की आँधियाँ,
हर भाव को खुद में समेटे बंद मुठ्ठी सी है जिंदगी

ख़्वाहिश दर ख़्वाहिश, हसरतों का काफ़िला,
कभी हासिल, कभी नाकामियों का सिला,
कभी आये समझ, तो कभी नासमझी का परदा,
एक अनसुलझी पहेली सी है जिंदगी...

• • •

‘गर देश है महान तो...’

अनिल कुमार बेनीवाल

लेखापरीक्षा अधिकारी



गर देश है महान तो,
महान बनता चल ।
सभी देशवासियों को ले के,
अपने साथ चलता चल ।

ना कर सके कद्र उस किसान की,
जो चला रहा खेतों में हल,
तो यूँ समझ ले कि तू,
कर रहा, अपनी मातृभूमि से छल ।

हिन्द की सीमाओं के जो है निगेहबां,
उन वीरों की ललकार को सुनता चला ।

हर किसी को नहीं जरूरत,
सीमाओं पे जा के लड़ने की,
पर जो खड़े हैं वहाँ,
उन जैसा बनता चल ।

कश्मीर से कन्याकुमारी,
और गुजरात से अरुणाचल ।
ये एक है, और इनकी एकता को,
बनाये रखता चल ।

है नहीं कोई भी धर्म जो सिखाये,
अपने भाईयों से करना छल ।
कर सके तो, अपने धर्म को
इस देश पर न्यौछावर करता चल ।

गर देश है महान तो,
महान बनता चल ।
सभी देशवासियों को ले के,
अपने साथ चलता चल ।

• • •

‘कार-नामा’

अनिल कुमार बेनीवाल

लेखापरीक्षा अधिकारी



मेरा जन्म स्थल गाँव चूली बागडियान, जिला हिसार, हरियाणा है। मैंने जून 2006 में प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) अहमदाबाद, गुजरात के कार्यालय में बतौर अनुभाग अधिकारी कार्यभार ग्रहण किया अर्थात् मेरी जन्म भूमि और कर्म भूमि में लगभग 1000 किलोमीटर की दूरी है। मेरे लिए नौकरी के शुरुआती वर्षों में इन दो स्थलों के बीच आवागमन का एक मात्र साधन भारतीय रेल रही। समय के साथ-साथ घर जाने का समय पूर्व निर्धारित करना मुश्किल होता गया। अब्बल तो ऐन समय पर ट्रेन टिकट मिलना लगभग नामुमकिन होता है, दूसरे धीरे-धीरे मुझे रेलगाड़ी के डिब्बे का कम्पार्टमेंट या बर्थ घुटन का अनुभव कराने लगे। शायद इसका मुख्य कारण भारतीय रेल की मंथर गति और आवश्यकता से अधिक समय की बर्बादी ही थी। हवाई जहाज़ से सीधी उड़ान संभव ही नहीं है। अधिक से अधिक जयपुर या दिल्ली तक की उड़ान भर कर आगे का सफ़र रेलगाड़ी या सड़क माध्यम से ही पूरा करना विकल्प है। यह माध्यम पैसे और समय दोनों की बर्बादी से अधिक कुछ नहीं है। दूसरे हवाई जहाज़ का सफ़र कुछ ऐसा महसूस होता है जैसे आप ने एक जगह से दूसरी जगह छलांग लगाई है। किसी ‘फ़्रेम ऑफ़ रेफ़रेन्स’ के अभाव में ‘टेक-ऑफ़’ के चंद सेकंड्स के रोमांच के अलावा हवाई सफ़र भी मेरे लिए नीरस ही रहता है। तो ऐसी स्थिति ने मुझे आवागमन का नया माध्यम चुनने के लिए मजबूर किया।

नवम्बर 2013 का महीना आरम्भ हो चुका था । मेरी पत्नी और बच्चे परिवार के साथ दीवाली का त्योहार मनाने गाँव गए हुए थे । मुझे भी जाना था । घर से फ़ोन आते थे कि क्या तुम आ रहे हो ? ट्रेन टिकट बुक करवा ली या नहीं ? मैं बोलता था कि अभी सोचा नहीं है, क्योंकि मैंने इस बार कुछ अलग सोच रखा था । शुक्रवार 01 नवम्बर 2013 शाम को मैंने मेरे कार्यालय के दो दोस्तों की मदद से एक 'विंडो एयर-कंडीशनर' जो मुझे अभी इस्तेमाल नहीं करना था, मेरी कार की डिग्गी में रखा, सामान पैक किया और घर के लिए अगले दिन के सफ़र की रुपरेखा दिमाग में संजोये हुए सोने चला गया । सुबह ठीक 4:30 बजे अलार्म की आवाज़ से नींद खुली । थोड़े असमंजस, थोड़ी बेचैनी और कुछ नया करने के उत्साह के साथ मैंने सफ़र पर निकलने की तैयारी शुरू की । ठीक 5:30 पर मैं और मेरी कार लगभग 1000 किलोमीटर दूरी, जो हमने कभी अकेले एक दिन में तय नहीं की थी, मापने के लिए चल पड़े । मेरे लिए मेरी कार एक मशीन न होकर एक दोस्त है, एक ऐसा दोस्त जिस पर मुझे विश्वास रहता है कि मुझे रास्ते में धोखा नहीं देगा ।

रास्ते में मेरी दादी जी का फ़ोन आता है यह पूछने के लिए कि मैं क्या करा रहा हूँ ? मैंने 'ऑडियो सिस्टम' की आवाज़ बंद की, फ़ोन उठाया और बोला कि मैं अहमदाबाद में हूँ, घर पर । लगभग आठ घंटे में मैंने उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा होते हुए किशनगढ़ का लगभग 600 किलोमीटर का सफ़र तय किया और एक हाईवे होटल पर लंच के लिए रुका । मन में यही विचार था कि अभी सिर्फ़ 400 किलोमीटर का सफ़र और बचा है और हालाँकि दिन छोटे हैं, मैं घर पर समय से पहुँच

जाऊंगा । लेकिन ये क्या ! मेरी आँखों के सामने एक बस पीछे होते हुए मेरी कार के ड्राइवर साइड के पीछे के टायर के ऊपरी हिस्से पर टक्कर मार देती है । जब तक मैं दौड़ कर कार के पास पहुँचता हूँ, बस निकल जाती है । कार का थोड़ा नुकसान हो जाता है और मन उदास (शिक्षा : बस और ट्रक जैसे बड़े वाहनों का 'ब्लाइंड-स्पॉट' बहुत ज़्यादा होता है, उनसे उचित दूरी रखें और ड्राइवर की नज़र में ही अपना वाहन खड़ा करें) । मैंने भोजन समाप्त किया और दुःखी मन से आगे के सफर पर निकल पड़ा । 'गूगल-मैप' के अनुसार मुझे 'किशनगढ़-हनुमानगढ़ मेगा हाईवे' पर 'कुचामन' से लक्ष्मणगढ़ के लिए सीधे हाथ की तरफ मुड़ना था । जैसे ही मैंने कुचामन शहर पार किया मैं देखता हूँ कि जिसे 'गूगल-मैप' सड़क बता रहा है वो तो बस एक पक्की पगडण्डी के अलावा कुछ नहीं है (शिक्षा: 'गूगल-मैप' पर आँख बंद करके विश्वास न करें, स्थानीय लोगों से आगे की सड़क के बारे में पुष्टि कर लें) । शाम होती जा रही थी, मैंने जैसे-तैसे उस सड़क, माफ़ करें पगडण्डी को पार किया और 'लक्ष्मणगढ़' पहुँचा । यहाँ मैंने चाय पी और अपने गंतव्य की तरफ निकल पड़ा । मैं फतेहपुर, चूरु होते हुए राजगढ़ शहर, जिसे भारतीय रेल ने 'सादुलपुर' नाम दिया है, पहुँचा । यहाँ से हिसार की दूरी 75 किलोमीटर है । पर सड़क कहाँ है ? वहाँ तो सिर्फ़ बड़े-बड़े गड्ढे ही थे, ऊपर से ट्रकों की भरमार । ये दूरी तो मेरे धैर्य और कार की 'बिल्ड-क्वालिटी' की परीक्षा सिद्ध हुई । लेकिन हम दोनों ने ही इस परीक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर लिया । आखिर मैं हिसार पहुँच गया । मैंने घर पर फ़ोन किया, बहन ससुराल से आई हुई थी, उसने जवाब दिया । मैंने कहा कि मैं हिसार पहुँच गया हूँ । बहन ने सोचा कि मैं बस या रेलगाड़ी से आया

हूँ तो उसने कहा कि वो पिताजी को मुझे लाने के लिए भेज रही है। मैंने कहा कि उसकी ज़रूरत नहीं है, मैं कार से आ रहा हूँ, तुम बस खाना तैयार कर लो और गीज़र चालू कर दो। उसे मुझ पर विश्वास नहीं हो रहा था और मुझे मेरे 'कार-नामे' पर। आखिर 1040 किलोमीटर का सफ़र 16 घंटे के बाद रात लगभग 9:30 बजे समाप्त हो गया और मेरे 'कार-नामे' की शुरुआत।

परिवार/रिश्तेदारों की प्रतिक्रिया

अब चूँकि मैं कार द्वारा अहमदाबाद से गाँव गया था तो यह लाज़मी था कि वापसी का सफ़र भी पत्नी और बच्चों के साथ कार में ही तय करना था। लम्बे सफ़र और सड़क मार्ग के खतरों को देखते हुए परिवार और रिश्तेदारों के मन में भय-जनित आशंकाओं का उदय होना स्वाभाविक ही था। परन्तु फिर भी उन्होंने मेरे इस फैसले को स्वीकार कर लिया। सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो मुझे पिता जी द्वारा मिली स्वीकृति पर था क्योंकि उनका स्वभाव तो छोटी-से-छोटी बात पर भी बहुत अधिक चिंता व्यक्त करने का है। शायद इसके पीछे उनके मन में उत्पन्न वह सुरक्षा की भावना थी जो कह रही थी कि चलो अब उनका बेटा रेलगाड़ी/बस इत्यादि पर निर्भर नहीं रहा और वो किसी मुश्किल घड़ी में एक निश्चित समय में गाँव पहुँच सकता है।

अनुभव

नवम्बर 2013 के मेरे उस पहले सफ़र के बाद मैं अधिकतर कार द्वारा ही मेरे गाँव गया। इसके अलावा मैंने सपरिवार लगभग सारे गुजरात, आधे महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश का भ्रमण भी कार द्वारा ही किया। लेकिन यहाँ मैं मेरे अनुभवों का वर्णन गुजरात और हरियाणा के मध्य तय की गयी मेरी यात्राओं तक ही सीमित रखूँगा।

इन छह वर्षों में हुए सड़कों के द्रुत विकास ने मुझे सबसे अधिक

आश्चर्यचकित किया। राजस्थान और हरियाणा में नए राष्ट्रीय और राज्य मार्गों के बिछे जाल ने वर्ष 2013 में तय की गयी 1040 किलोमीटर की दूरी को अब 965 किलोमीटर पर ला दिया है और 16 घंटों का सफ़र 14 घंटों में आसानी से तय किया जा सकता है। आप को किसी भी शहर के अन्दर से निकलने की आवश्यकता नहीं है बस बाहर से निहारते हुए अपनी रफ़्तार बनाये रखिये।

मैंने मेरी सड़क यात्राओं में यह अनुभव किया है कि रेलगाड़ी और बस की तुलना में अपनी कार से तय की गयी दूरी छोटी प्रतीत होती है। आप दूरी को किलोमीटर की बजाय समय में मापना शुरू कर देते हैं। जिस भी जगह से आप गुज़रते हैं उस जगह से आप का जुड़ाव हो जाता है। नागौर और बीकानेर के बीच के लगभग 125 किलोमीटर के सफ़र का तो आनंद ही कुछ और है। यहाँ है रेल पटरी के समानांतर चल रही सड़क जो 5 या 6 बार एक-दूसरे को काटती है। यदि कोई ट्रेन लगभग उसी समय पर नागौर/बीकानेर से निकलती है जब आप नागौर/बीकानेर छोड़ते हैं फिर तो आप अपने आप को 'दिल चाहता है' फ़िल्म के एक गाने में दर्शाए गए दृश्यों की नकल करते हुए पायेंगे। इसी दौरान यदि बारिश हो रही हो तो फिर क्या कहने। राजपूत वीरों की सूखी धरती में फैले हुए रेत के टीलों की भीगती हुई मिट्टी से उठती गंध आपको वशीभूत कर देती है। आप के साथ दौड़ रही ट्रेन और ऊपर से बरस रहे अमृत के दृश्य की यादें तो भविष्य में भी आँखें बंद करने पर आप को सुकून देती रहती है।

अपनी कार से यात्रा करने का एक और बड़ा फ़ायदा यह है कि आप को ट्रेन में परोसे गए निम्न दर्जे के खाने और बस ड्राइवर द्वारा चुने गए होटल में ही भोजन ग्रहण करने की बंदिश से मुक्ति

मिल जाती है । आप का जहाँ मन करे वहाँ रुकिए, जितनी देर तक चाहें ठहरिये और फिर अपनी मंज़िल की तरफ़ चल पड़िए । कभी किसी अच्छे हाईवे होटल के बरामदे में बैठकर सामने से गुज़र रही सड़क पर सरपट दौड़ रहे वाहनों और उनमें सवार यात्रियों को गौर से देखिये । हर-एक की अलग-अलग भावनाएँ महसूस कर पाएंगे । कोई अपनी आँखों में अपनी मंज़िल के सपने संजोये सफ़र का मज़ा ले रहा है तो कोई जैसे-तैसे अपने सफ़र को बस पूरा करना चाह रहा है । कुछ लोग तो भाव शून्य नज़र आयेंगे । आँखों के सामने पूरी ज़िन्दगी दौड़ती नज़र आएगी । क्या ये दृश्य हमारी ज़िन्दगियों की प्रतिकृति नहीं है ?

‘सिरोही’ के नज़दीक सड़क पर बनी सुरंग को पार कीजिये और थोड़ा चलने पर आता है ‘बाबा रामदेव होटल’, यहाँ आप अच्छे भोजन का आनंद ले सकते हैं । ‘पाली’ के पास है होटल ‘नमस्ते’ । यहाँ आप खरीद सकते हैं हस्तशिल्प और अन्य राजस्थानी कलाकृतियाँ । लेकिन वस्तुओं पर लगे ‘प्राइस टैग’ देखकर घबराएँ नहीं, वो तो विदेशी पर्यटकों के लिए हैं, हम भारतीयों के लिए दाम ‘आधे’ हैं । क्या यही है भारतीयता ? ‘इनक्रेडिबल इंडिया’ । जोधपुर से निकले तो ‘जनता स्वीट्स’ की ‘मावा कचौड़ी’ और ‘मिर्ची वड़े’ का आनंद ज़रूर लें और बीकानेरी ‘रसगुल्ले’ और ‘भुजिया’ को चखे बिना कैसे छोड़ सकते हैं ?

अहमदाबाद से जाते हुए ‘मेड़ता’ शहर (यदि जोधपुर-बीकानेर होते हुए नहीं निकलना है) से कुछ पहले, सड़क के दोनों ओर लाल पत्थर से बने हुए दो स्तम्भ हैं । इनकी दूरी अहमदाबाद के मेरे घर से ठीक 500 किलोमीटर है, ना 100 मीटर कम ना 100 मीटर अधिक । ये तो मेरे लिए एक सुखद आश्चर्य है । एक ऐसा ‘लैंड मार्क’ जो मुझे मेरे सफ़र को नियोजित करने में

मदद करता है । ‘मेड़ता’ शहर के ‘बाय-पास’ से निकलते हुए ‘मीराबाई’ और उनकी पवित्र धरती को नमन करना दिल को सुकून प्रदान करने वाला क्षण होता है ।

मेरे वापसी के सफ़र में ‘उंझा’ के नजदीक ‘जीरे’ की खुशबू मुझे याद दिलाती है कि मैं गुजरात में हूँ और मानो कह रही हो अपनी कर्म भूमि में तुम्हारा स्वागत है ।

मेरा ये ‘कार-नामा’ एक ऐसा सफ़र होता है जो ‘गरवी-गुजरात’, ‘रंगीलो-राजस्थान’ और ‘हरा-भरा हरियाणा’ तीनों का अनुभव मुझे कराता है ।

सलाह

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेरे लिए कार का सफ़र एक आनंद प्रदान करने वाला अनुभव होता है । लेकिन हर किसी के लिए शायद कार द्वारा इतना लम्बा सफ़र तय करना संभव ना हो । इसके लिए कुछ शर्तों का पूरा होना आवश्यक है । आप कार द्वारा इतने लम्बे सफ़र, जो केवल एक दिन में तय किया जाना है, के लिए तभी निकलें जब आप ‘ड्राइविंग’ को एक कला मानते हों न कि बोझ । यात्रा पर निकलने से पहले ये सुनिश्चित कर लें कि कार का ‘इंजन आयल’, ‘ब्रेक आयल’, ‘कूलेंट’ और ‘विंड स्क्रीन वाशिंग फ्लूइड’ उचित लेवल पर है । टायरों की दशा और ‘एयर प्रेशर’ तथा कार की ‘ब्रेकिंग एफिशिएंसी’ संतोषजनक है और सब से महत्वपूर्ण बात- आपका परिवार इस अभियान में आपके साथ है ।

आपकी यात्रा मंगलमय हो ।

• • •



श्रीमती रचना जे. सिंह, उप-महालेखाकार (प्रशासन) और श्री पवन सिंगला, हिंदी अधिकारी, अहमदाबाद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 74वीं बैठक में अध्यक्ष महोदय से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए ।



हिन्दी पखवाड़ा में नाट्य प्रस्तुति



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर १०वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए पुरस्कार प्रदान करती श्रीमती प्रीति अब्राहम (प्रधान निदेशक)



स्वतंत्रता दिवस समारोह

कला पर्व... एक झलक







हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करती हुई
श्रीमती प्रीति अब्राहम (प्रधान निदेशक)



सरस्वती वंदना



हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह में कार्यालय के सदस्यों को संबोधित करते हुए
डॉ. रघुवीर चौधरी



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्ति गीत

पेड़ है तो जीवन है

चिंटू कुमार गुप्ता

लिपिक/टंकक



आज के युग में हम मिलावट की दुनिया में जीते हैं। हम सुख-सुविधा की चीजें इकट्ठा करने में लगे रहते हैं। जिस धरती पर हमारा आवास है, उसकी रक्षा के लिए हम क्या करते हैं?... बस बातें और बातें। जहाँ हम, एक ओर पेड़ लगाने की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर मिट्टी न हो और सफ़ाई न करनी पड़े इसलिए खुद के घर के आस-पास पत्थर लगाने लगे हैं। पेड़ नहीं लगाते क्योंकि आज के व्यस्त जीवन में जब हम अपने परिवार के लिए वक्त नहीं निकाल पाते, तो हम उस पेड़ के लिए वक्त कहाँ से लायें? हम अपने निजी सुख की भाग-दौड़ में भूल जाते हैं कि हमें अपने जीवन में शुद्ध हवा के लिए पेड़ों की ज़रूरत पड़ती है। बिना भोजन किए तो हम कुछ दिन जीवित रह सकते हैं परन्तु शुद्ध हवा अर्थात् ऑक्सीजन बिना तो हमारा जीवन कुछ देर के लिए भी संभव नहीं है। हमारी शुद्ध हवा की ज़रूरत को जो पूरा करता है, वह पेड़ है। क्या हम थोड़ा समय निकाल कर एक पेड़ नहीं लगा सकते? हम अपनी भाग दौड़ भरी जिंदगी में से कुछ समय पेड़ को नहीं दे सकते? बस बातें छोड़ कर हम पेड़ लगायें और जीवन को बचाएं, मात्र पेड़ लगाने से ही पेड़ नहीं लगते, उस पेड़ को पानी देना और जीव जंतुओं से बचाना भी आवश्यक है।

क्योंकि पेड़ों से ही जीवन सम्भव है, उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हम सभी को अपना नैतिक दायित्व समझ कर कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए और बड़े होने तक उसकी देखभाल भी करनी चाहिए। पेड़ है तो जीवन है।

• • •

सकारात्मक सोच

छत्रपाल सिंह राठौर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



हम जैसा सोचते हैं वैसा ही प्राप्त करते हैं। नकारात्मक सोच जहाँ हमें निराशा और नाकामी देती है, वही सकारात्मकता हमें सफलता की ओर अग्रसर करती है। हमारी सोच हमारी कार्यक्षमता को प्रभावित करती है। यदि हम यह ठानकर चलें कि आज दिनभर हम जो भी सोचेंगे, अच्छा ही सोचेंगे तो निश्चित ही हमारा दिन अच्छा जाएगा। कई बार हम कुछ ऐसे लोगों की संगति में फँस जाते हैं, जो हमेशा अपने दुःखों का ही रोना लेकर बैठ जाते हैं, मानो जीवन में उन्हें खुश रहना आता ही न हो।

सकारात्मक सोच के लिए :

- अच्छे काम में मन लगाएँ—आप अपने आप को मानसिक तनाव से मुक्त करने के लिए मधुर संगीत सुनें, मौजमस्ती करें, अच्छा साहित्य पढ़ें।
- व्यर्थ की बहस से बचें—फिज़ूल बातों पर बहस करने से आपका तनाव बढ़ता है अतः इससे बचना चाहिए।
- हर रोज़ कुछ नया करें—अगर हम हर रोज़ अपनी जीवनशैली में कोई सकारात्मक बदलाव लायेंगे तो निःसन्देह ही अच्छा सोचेंगे व अच्छा करेंगे।
- सोच का दायरा बढ़ाएँ—आप जिस बारे में सोचते हैं, वही आप को मिल सकता है, अतः अपनी सोच को सीमित न रखें।

- अच्छे लोगों से दोस्ती करें—अच्छे लोगों के साथ रहने से आपको एक नई प्रेरणा मिलेगी और निराशा आपके जीवन से छू-मंतर हो जाएगी ।

एक सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति अदृश्य को देख लेता है, अमूर्त को महसूस करता है और असंभव को संभव बना लेता है ।

• • •

न्यूयॉर्क में एक शाम

धनवंती टिब्बानी सिसोदिया

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



इस वर्ष मुझे कार्यालय की तरफ से संयुक्त राष्ट्र की लेखापरीक्षा के लिए न्यूयॉर्क जाने का अवसर मिला। न्यूयॉर्क अमेरिका का बहुत ही खूबसूरत शहर है। बड़ी-बड़ी इमारतें इसकी शोभा बढ़ाती हैं। एक शाम कार्य पूर्ण करने के बाद हमने तय किया कि हम ब्रुकलिन ब्रिज देख कर आयेंगे। ब्रुकलिन ब्रिज जाने के लिए मेट्रो स्टेशन गए और ब्रुकलिन जाने वाली ट्रेन में सवार हो गए। न्यूयॉर्क की मेट्रो को देख कर यह एहसास हुआ कि दिल्ली मेट्रो की संकल्पना (Concept) वहीं से ली गई है। ब्लू लाइन, पंक लाइन, ऑरेंज लाइन आदि तरह-तरह की मेट्रो वहां भी चलती हैं। अन्दर आगे आने वाले स्टेशन कतार में लिखे हुए हैं तथा उसी तरह उद्घोषणा भी हो रही थी कि अगला स्टेशन कौन सा होगा। हम बहुत ही उत्साहित थे क्योंकि हमने सुना था ब्रुकलिन ब्रिज संध्या के समय रौशनी से जगमगाता, बहुत ही सुन्दर दिखता है। हम हमारे गंतव्य स्टेशन पर उतर कर ब्रुकलिन ब्रिज की ओर चल पड़े। आस पास बड़ी-बड़ी इमारतें दिखाई दे रही थीं। कुछ दूर चलने के बाद ब्रिज प्रारंभ हो गया। वहाँ कई सारे लोग पर्यटकों को लुभाने के लिए न्यूयॉर्क की कई चीजों के चित्र तथा प्रसिद्ध इमारतों के स्मृति चिन्ह ले कर बैठे थे। ब्रुकलिन ब्रिज पर चलना आरम्भ किया तो पीछे की तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें, नीचे रोड पर चलती कारें और आस-पास दोनों तरफ पानी, बहुत ही खूबसूरत नज़ारा

था । हमने सभी दिशाओं से तस्वीरें लीं । रोशनी से जगमगाता हुआ ब्रिज बहुत ही खूबसूरत लग रहा था । ब्रिज काफी लम्बा था । हमें उम्मीद नहीं थी कि हम पूरा ब्रिज चल कर पार कर लेंगे । धीरे-धीरे चलते, बातों-बातों में, तस्वीरें लेते हुए पता ही नहीं चला कि हम कब ब्रिज के उस पार पहुँच गए । समय देखा तो रात के 8.30 बज चुके थे । अब डर लग रहा था कि देर हो गयी है, घर किस तरह जाएँ । जितना चल कर आये थे, उतना चल कर दोबारा जाने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे । कुछ दूर पहुँच कर हमें ज्ञात हुआ कि 1 किलोमीटर और चलने के बाद मेट्रो स्टेशन है जहाँ से मेट्रो द्वारा घर जा सकते हैं । रात का अंधेरा, अनजान शहर और इतना चल कर थकान भी बहुत हो चुकी थी । तभी हमने देखा वहाँ एक वाटर टैक्सी जिसे न्यूयॉर्क में dumbo ride कहा जाता है, वहाँ खड़ी थी और कुछ लोग उसमें जा भी रहे थे । पर हमने सोचा यह काफी महंगी होगी और हमें वैसे भी बहुत लेट हो रहा था तो इसमें सफ़र करना, कल्पना मात्र था । कुछ आगे चलने पर और पूछताछ करने पर हमें ज्ञात हुआ कि यह United Nations के पास तक भी जाती है तथा इसका किराया और मेट्रो ट्रेन का किराया बिल्कुल बराबर है । यह सुनकर मैं बहुत ही खुश हो गयी । अभी हमारे घर की तरफ़ जाने वाली dumbo ride को आने में 20 मिनट का समय था । कुछ ही दूरी पर टिकट लेने के लिए मशीन लगी थी जहाँ जाकर हमने अपने लिए टिकट ले ली और अपनी पहली dumbo ride का इंतज़ार करने लगे । जब वह dumbo ride आई तो हम खुशी-खुशी उसमें सवार हो गए । अन्दर पहुँचते ही मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । बहुत खूबसूरत रौशनी तथा किसी मिनी क्रूज़ जैसी यह dumbo ride थी । अन्दर टीवी लगा हुआ था जिसमें

dumbo ride का रूट दिखाया जा रहा था । एक छोटा रेस्टोरेंट भी इसके अन्दर था । अन्दर पहुँच कर जब हम बैठे तो एक व्यक्ति ने आकर हमसे पूछा, “आप यहाँ बैठना चाहते हैं या ऊपर खुली हवा में ?” हमने उन्हें कहा क्योंकि ठण्ड बहुत है और पानी के बीच ठण्ड और बढ़ेगी तो हम वहीं ठीक हैं । उनके जाते ही हमें एहसास हुआ कि जब न्यूयॉर्क में हैं तो ठण्ड से क्या डरना । यही सोच कर हम ऊपर की ओर भागे । इतने में dumbo ride का सफ़र आरम्भ हो गया । बड़ी मुश्किल से हम ऊपर की सीट तक पहुँचे । नज़ारा देख कर हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा । एक तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें, आस-पास पानी, एक तरफ ब्रुकलिन ब्रिज । इतना खूबसूरत नज़ारा देखकर, चल कर आने की सारी थकान गायब हो गयी । बर्फीली हवाएं चल रही थीं । इस dumbo ride में आठ स्टॉप आने थे और किस्मत से हमारा स्टॉप आखिरी था । आधे घंटे का यह सफ़र मेरी ज़िन्दगी का सबसे खूबसूरत सफ़र है जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगी । अपने स्टॉप पर उतर कर कुछ ही दूर चल कर हम घर पहुँच गए । अगले दिन मैंने अपने ऑफिस के मित्रों को इसके बारे में बताया और जाने के लिए प्रेरित भी किया । वे लोग भी इस यात्रा के बारे में जानकर बड़े ही उत्साहित हुए ।

• • •

मेरे यू.एन. ऑडिट के संस्मरण

प्रकाश महावर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री साईरामदास सर से उनके यू. एन. ऑडिट के अनुभव सुनकर मेरे मन में यू.एन. ऑडिट तथा जिनेवा के प्रति रूचि अत्यधिक बढ़ गई। नवंबर 2017 में मुख्यालय द्वारा उपयुक्त अधिकारियों से यू.एन. ऑडिट की परीक्षा हेतु सम्मति मांगी गई। चूंकि मैं पात्रता मानदंडो को पूर्ण करता था अतः मैंने भी अपनी सम्मति प्रस्तुत कर दी। यू.एन. ऑडिट की परीक्षा अंग्रेजी माध्यम में तथा वर्णनात्मक होती है इसलिए परीक्षा को लेकर मेरे मन में थोड़ा संकोच भी था क्योंकि मैंने अपनी 12वीं कक्षा तक की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से तथा आगे एम.फ़िल. तक की पढ़ाई गुजराती माध्यम से की थी। मुझे जब भी समय मिलता मैं परीक्षा के लिए पढ़ता रहता। 23 फरवरी 2018 को परीक्षा निर्धारित थी। श्री चंद्रेश खंडेलवाल तथा मैंने मुंबई जाने तथा वापसी का टिकट पहले ही बुक करवा लिया था। 18 फरवरी रात्रि को मेरी मम्मी की तबियत अचानक ज़्यादा खराब होने से उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। मम्मी की खराब तबियत के कारण मैं यू.एन. ऑडिट की परीक्षा में शामिल नहीं होना चाहता था परंतु छोटे भाईयों के बहुत कहने पर मैं परीक्षा देने गया।

श्री चंद्रेश और मैं 22 फरवरी की सुबह ही मुंबई पहुँच गए थे। मेरा मन परीक्षा की तैयारी में नहीं लग रहा था परंतु श्री चंद्रेश ने मुझे पढ़ाई करने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया। परीक्षा में मुझे केवल एक प्रश्न के सिवाय बाकी सभी प्रश्नों के उत्तर लिखने में ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई।

दिनांक 27 जून 2018 को आर्थिक क्षेत्र-1 के दो अधिकारियों के यू.एन. ऑडिट हेतु चयनित होने की जानकारी मिली। मैंने भी ऑफिस से निकलते समय शाम 6.30 बजे अपना ई-मेल चेक किया, परंतु मुझे निराशा हुई क्योंकि मुझे यू.एन. ऑडिट से संबंधित कोई ई-मेल नहीं आया था। घर जाने के बाद रात में मैं काफी देर तक मेरे चयनित न होने के कारणों को सोचता रहा। दूसरे दिन सुबह श्री प्रवीण सिसोदिया सर का मुझे 'बधाई हो' का संदेश प्राप्त हुआ। ई-मेल चेक करने पर ज्ञात हुआ कि दिनांक 27 जून 2018 को शाम 6.37 बजे मुझे यू.एन. ऑडिट के चयन का ई-मेल प्राप्त हुआ था। मेरा युनिसेफ पी.एफ.पी. डिविजन के ऑडिट हेतु नामांकन किया गया था तथा मुझे ऑडिट हेतु जिनेवा, स्विट्जरलैंड जाना था। यह जानकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। ऑडिट की अवधि चार सप्ताह की थी तथा टीम में कुल पाँच सदस्य थे।

ऑडिट शुरू होने के पूर्व आई.सी.ई.डी. (ICED) जयपुर में सितंबर 2018 में हमारे प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें मुझे बाकी टीम मेम्बर्स से मिलने का मौका मिला। हम सभी टीम मेम्बर्स ने ऑडिट शुरू होने के पूर्व काफी तैयारी कर ली थी। ऑडिट के लिए हम दिनांक 22 फरवरी 2019 को दिल्ली हवाई अड्डे से जिनेवा के लिए रवाना हुए। तकरीबन 12 घंटों का सफ़र काफी थका देने वाला था। परंतु जैसे ही मैं जिनेवा पहुँचा मेरी सारी थकान दूर हो गई। हम सभी टीम मेम्बर्स स्विट्जरलैंड तथा फ़्रांस की सीमा पर स्थित गिलार्ड के एक होटल में ठहरे थे।

यू.एन. कार्यालय में ऑडिट को बहुत सकारात्मक रूप से लिया जाता है। एन्ट्री कॉन्फरेंस में सभी अधिकारियों का ऑडिट टीम से परिचय करवाया गया। ऑडिट का सारा कार्य पेपर मुक्त एवं

कम्प्यूटर आधारित था। ऑडिट शुरू होने से पूर्व ही हमें लॉग-इन आई.डी. एवं पासवर्ड दे दिये गए थे। ऑडिट संबन्धित सारी जानकारी तथा ऑडिट पैरा का आदान-प्रदान शेयर-ड्राइव तथा ई-मेल के माध्यम से होता था। ऑडिट के दौरान हमने ऑडिट रिक्विज़ीशन, ऑडिट क्वेरी तथा ऑडिट ऑब्ज़र्वेशन जारी किए। ऑडिट के दौरान हमें यू.एन. अधिकारियों तथा कर्मचारियों का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। एक्ज़िट कॉन्फ़रेंस में सभी ऑडिट पैरा पर विस्तृत रूप से विचार-विमर्श हुआ। यू.एन. कार्यालय ने हमारे ऑडिट कार्य को खूब सराहा। ऑडिट के अंत में हमने ड्राफ्ट मैनेजमेंट लेटर बनाया तथा महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों (key documents) को इलेक्ट्रॉनिक फ़ॉर्म में मार्क किया। हमने ऑडिट संतोषजनक रूप से पूरा किया।

शनिवार तथा रविवार को यू.एन. कार्यालय में छुट्टी होने के कारण हमें बहुत सारी नई जगहें घूमने का मौका मिला। स्विट्ज़रलैंड में हमने युंगफ्राउ, टिटलिस, राइन फॉल, गोल्डन पास तथा जिनेवा, बर्न, ज़्युरिक, मौन्त्रो, लूसर्न, इंटरलेकन, ग्रुयेरा शहर घूमे।

मैंने Ex-India छुट्टी भी ली थी जिसमें मैं पेरिस, वेनिस तथा रोम शहर घूमा। दिनांक 30 मार्च 2019 को मैं दिल्ली वापस लौटा तथा दो दिन मुख्यालय में रुकने के बाद अहमदाबाद वापस आ गया। मैं एक सामान्य एवं गरीब परिवार से हूँ। मेरे पिता जी एक मिल मजदूर थे। इसी कारण विदेश जाना मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं था। यू.एन. ऑडिट का अनुभव मेरे जीवन एवं ऑडिट कार्य में बहुत लाभदायी हुआ।

मैं मेरी सारी जिंदगी इस अनुभव को कभी भूल नहीं पाऊंगा। कार्यालय का मैं हमेशा कृतज्ञ रहूंगा।

• • •

कोरा कागज़

प्रदीप कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सोचा था एक दिन पूरा कर देंगे सपना उनका,
जो लोग हमारे अपने हुआ करते थे,
वीरान से पड़े हैं अब उन मंज़िलों के रास्ते,
जो लोग सोच न सकें वो हमारे सपने हुआ करते थे ।

जाने क्यों धुंधला सा पड़ गया है किरदार मेरा,
वरना हम भी सरगमों की शान हुआ करते थे ।
अगर आज सफल नहीं हो पाए तो क्या,
कभी-कभी पहले भी तो फेल हुआ करते थे ।
उठ जा ऐ राही तुझे अभी आगे बढ़ना है,
चल पड़ उन राहों पर जहाँ तेरी जीत के निशान हुआ करते थे ।
कह दूँ एक बात अगर माने तू...
हाथ की लकीरों में ही सब कुछ नहीं होता,
मांगने से ही मिल जाता सब तो कोई भूखे पेट नहीं सोता,
कुछ लालच ज़रूर छुपा होता है,
वरना यहाँ कोई किसी के लिए नहीं रोता,
मत हार हिम्मत तू भी पहुँच जायेगा मंज़िल तक सबकी तरह,
अब चंद शब्द लिख दिए किस्मत ने,
वरना वो सब भी कोरा कागज़ हुआ करते थे ।

• • •

गीता-सम्पूर्ण जीवन दर्शन (मेरी दृष्टि में)

प्रशान्त शुक्ला

लेखापरीक्षक

गीता की वैज्ञानिकता/दर्शन की महिमा लोगों द्वारा (अपने-अपने समझ और मानसिक विस्तार के आधार पर) सुनते आते रहने पर भी बचपन से विद्यार्थी जीवन तक, कभी उस ओर मेरा ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ, या शायद अपने प्रश्नों, दुविधाओं, मानसिक द्वंदों का हल (जो कि मानव जीवन की आधारभूत आवश्यकता है) अपने आस-पास के लोगों (परिवार, माता-पिता, मित्रों, शिक्षकों) से मिलता रहा, तो गीता श्लोकों के मूल्यों का महत्त्व समझ नहीं आया । अब ऐसा लगता है कि अच्छा हुआ, शायद इसकी व्याख्या करने/समझने की क्षमता ही नहीं थी, शायद अभी भी नहीं क्योंकि विद्वानों की मानें तो गीता के दर्शन/ज्ञान की उचित और सटीक व्याख्या सामान्य बुद्धि से संभव ही नहीं । फिर भी कुछ अंश जिसे समझने में मुझे अत्यधिक समय/ऊर्जा लगी, लिखता हूँ ।

‘यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम् ॥’

जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और जहाँ धनुर्धारी अर्जुन वहाँ श्री, विजय, विभूति व अचल नीति है । अगर प्रतीकात्मकता को समझा जाय तो जहाँ अर्जुन (कर्मयोगी, अच्छा सीखने वाला/मानव शरीर) और कृष्ण (ज्ञान योगी/मानव सारथी/समत्व बुद्धि) हैं वहाँ सम्पन्नता/विजय/यश है अर्थात् शोक/दुःख/रोग नहीं आ सकते ।

द्वितीय अध्याय में सांख्य योग/ज्ञान योग की विवेचना करते हुए (जो मुझे सबसे महत्त्वपूर्ण लगा) श्री कृष्ण कहते हैं कि सांसारिक भोगों की अप्राप्ति से उत्पन्न होने वाला विषाद (जो शायद आज लोगों की समस्याओं की जड़ है), व्यक्तित्व को बिखेर देता है और अप्रसन्नता का प्रादुर्भाव होता है लेकिन यही विषाद धर्म केन्द्रित होने पर आध्यात्मिक क्रांति का कारण बनता है ।

“कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥”

व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म में है फल में नहीं, इसलिए कर्मफल का हेतु मत बन (कि मेरे द्वारा यह कर्मफल जनित है) न ही कर्मों का त्याग कर ।

क्योंकि कर्मफल तो व्यक्ति के हाथ में होता ही नहीं, कितना भी योजनाबद्ध कर्म हो, कर्मफल तो सदा प्रारब्ध के आधीन है। अर्जुन के पुनः प्रश्न करने पर कि यदि कर्मफल में अधिकार नहीं तो कोई प्राणी कर्म ही क्यों करे, कर्म का त्याग क्यों न करे ? इस पर श्री कृष्ण मानव-मन की स्वाभाविक प्रक्रिया के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं - कि कर्म का त्याग करने से पहले यह तो जान लो कि प्रारब्ध क्या है, प्रारब्ध भगवान की/मेरी इच्छा नहीं, बल्कि प्रारब्ध हमारे ही विगत कर्मों का लेखा-जोखा है बल्कि कर्म और कर्मफल के गणित में मेरा/भगवान का तो कोई हस्तक्षेप ही नहीं होता । अगर हमें कुछ अप्राप्य है (हमारे अथक प्रयास पर भी) तो यह प्रारब्ध, हमारे पिछले कर्मों के कर्मफल हैं । अतः कर्म का त्याग तो संभव ही नहीं । यदि कर्मफल के बारे में विचार भी किया जाए तो क्या इससे फल की प्राप्ति होगी ? नहीं । बल्कि फल की आसक्ति में मनुष्य का मन अपने मार्ग से भटक जायेगा और जीवन में अस्थिरता ही बढ़ेगी ।

“सुखदुःखे समेकृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥”

अतः मनुष्य को राग-द्वेष, यश-अपयश, जय-पराजय, पाप-पुण्य आदि द्वंदों से दूर होकर कर्म में स्थित होकर, एकात्म भाव से कर्म करना चाहिए, यही निष्काम कर्मयोग है । जो इस गूढ़ रहस्य को भली-भांति जान लेता है (उसे कुछ भी अप्राप्य नहीं) उसे जानने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता, वो कर्म-कर्मफल के बन्धनों से सहज ही मुक्त हो जाता है क्योंकि उसे कर्मफल में आसक्ति नहीं है सुख और दुःख उसके लिए (ऋतुओं के समान) समान अवस्था है ऐसा स्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति, ‘स्थित-प्रज्ञ’ कहलाता है, वही मुझे सबसे प्रिय है और वही परम आनंद और मुक्ति का अधिकारी है ।

“दुःखेष्वनुद्विग्न मनः सुखेषु विगत स्पृहः

वितराग भय क्रोधः स्थिधीर्मनि रुच्यते ॥”

इसी दर्शन को बौद्ध साहित्यों में कार्य-कारण सिद्धांत अथवा ‘प्रतीत्य-समुत्पाद’ के सिद्धांत में भी दर्शाया गया है । जिसमें पुनर्जन्म को आत्मा के कर्मफल में आसक्ति और तदनुसार कर्मों में लिप्त होने का परिणाम बताया गया है । कर्मफल (सुख और दुःख) उससे लिप्त रहते हैं और आत्मा कर्मफल के आधीन, मुक्त नहीं हो पाती, और जन्म पुनर्जन्म की प्रक्रिया चलती रहती है ।

गीता में मात्र आध्यात्मिक दर्शन (विचार) की व्याख्या ही नहीं बल्कि मानव मन का विश्लेषण और अखंड/समबुद्धि बनाये रखने की व्यवहारिक प्रक्रिया भी प्रतिपादित है । अतः यह मानव-मन के रोगों का विश्लेषण और उससे मुक्त होने की औषधि का विधि-विधान सहित सुझाव देता है ।

इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति रूपी शत्रु से छुटकारा, आसक्ति रहित कर्म (निष्काम कर्म योग)के लिए सिर्फ़ दो रास्ते बताये गये हैं, वे हैं - अभ्यास और वैराग्य ।

अभ्यास - का मतलब ध्यान/समत्व बुद्धि/कर्म में योगस्थ रहना ।

वैराग्य - का मतलब सन्यासी बनकर घर-बार छोड़कर जंगलों में भटकना नहीं, सांसारिक उपभोगों का भोग न करना भी नहीं बल्कि मन से वैराग्य अर्थात् विषयों में आसक्ति का परित्याग । यही शायद दो सबसे आसान या सबसे कठिन मार्ग (जिसको जानने में एक जीवन कम पड़ जाता है) हैं । उपर्युक्त दर्शन/विचार ने मेरे जीवन में बहुत प्रभाव छोड़ा, यदि किसी एक पाठक के जीवन को भी यह प्रभावित कर पाए तो मैं स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव करूँगा । ॐ शांति ॥

• • •

यात्रा वृत्तान्त

प्रवीण सिसोदिया

लेखापरीक्षा अधिकारी



कार्यालय ज्वाइन करने के पश्चात् जब वापस घर जाने के लिए टिकट बुक करने लगा तो मेरे मित्र ने कहा “यार ! तुम तो सवाई माधोपुर से हो, रणथम्भोर कैसा है ? मैंने बहुत नाम सुना है ।” मैंने बड़े बेपरवाह ढंग से कहा, “बहुत अच्छा है, बहुत बड़े-बड़े लोग आते हैं वहां हर साल, बाघ देखने ।” उसने पूछा, “तुम तो कई बार गये होगे क्योंकि तुम्हारा तो घर ही है ।” मैंने जवाब दिया, “मेरे घर में सभी गये हैं, मम्मी-पापा, भाई-बहन सभी, पर मैं नहीं गया हूँ अब तक ।” मेरे मित्र ने कहा, “क्या बात करते हो तुमने रणथम्भोर नहीं देखा ?” तो मुझे बड़ा बुरा लगा । तब हम दोनों ने तय किया कि वह भी मेरे साथ घर आएगा और हम साथ में रणथम्भोर जायेंगे, बाघ देखने । घर आने के बाद तय हुआ कि अगले ही दिन रणथम्भोर जायेंगे । मेरे पापा भी बहुत खुश हुए । उनके कहने पर, हम दोनों ने अगले दिन के लिए एडवांस बुकिंग भी कर दी । रणथम्भोर जाने के लिए सबसे बेहतर समय सितम्बर से नवम्बर माना जाता है । सौभाग्यवश हम भी नवम्बर में ही जा रहे थे । रात का भोजन करके हम दोनों जल्द ही सोने चले गए । रणथम्भोर की बातें करते-करते जाने कब हम दोनों को नींद आ गयी । अचानक ही मेरी नींद खुली तो मेरा दोस्त जोर-जोर से चिल्ला रहा था । मैंने डर के आँख खोली तो लगा शायद उसने कोई सपना देखा था । उसे हिला कर जगाया

तो बोला, “वो बाघ मेरे पीछे पड़ गया था, इसलिए मैं डर गया।” घड़ी में देखा तो 5.30 बज गये थे। हम दोनों जल्दी उठ कर तैयार हो गए। नाश्ता करके हम घर से निकल गए। हमारी प्रथम रणथम्भोर यात्रा के लिए हम दोनों बहुत ही उत्साहित थे। रणथम्भोर पार्क में घूमने के लिए कैटर अथवा जिप्सी में जाया जा सकता है। हमारी बुकिंग कैटर में थी। हम रणथम्भोर पार्क के लिए कैटर में सवार हो गए। शीघ्र ही रणथम्भोर यात्रा प्रारंभ हो गयी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, हमें सर्वप्रथम हिरन का झुण्ड दिखाई दिया जिससे हम बहुत ही खुश हो गये और मोबाईल से उनके फोटो लेने लगे। थोड़ी दूर जाने पर एक भालू नज़र आया जिससे हम और भी खुश हो गए। पर बाघ देखने की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी। आगे जाने पर और भी कई जानवर दिखाई दिए जैसे नील गाय, जंगली बिल्ली, ऊदबिलाव, लकड़बग्घा, मोर इत्यादि, पर बाघ नहीं दिखाई दिया। कैटर अपने निर्धारित मार्ग पर चल रहा था। काफी देर खड़े रहने के बाद भी हमें बाघ नहीं दिखाई दिया। तभी हमारे पास वाले कैटर के लोग बोले, “चुप हो जाओ, बाघ-आया, बाघ-आया।” झाड़ियों के पीछे सरसराहट तो हो रही थी परन्तु बाघ दिखाई नहीं दे रहा था। थोड़ी देर दम साध कर इंतज़ार करने के बाद भी जब बाघ दिखाई न दिया तो हम सब निराश हो गए। हमने गाइड तथा कैटर चालक को कहा, “भैया थोड़ा आगे ले लो शायद बाघ दिख जाये।” तब उन्होंने समझाया, “हम रूट नहीं बदल सकते, हमारा रूट निर्धारित होता है। आप लोग शोर करते हैं, इसलिए बाघ घबरा कर चला गया।” हम बहुत निराश हो गये। यात्रा पूरी करके हम घर के लिए निकले, पर मन बहुत ही उदास था। मुझे बहुत बुरा लग रहा था कि मैं अपने मित्र को रणथम्भोर बाघ ही दिखाने तो लाया था और

वही नहीं दिखा । यह सब सोचते हुए हम घर पहुँचे । घर पहुँचते ही पापा ने सबसे पहला सवाल पूछा, “बाघ दिखा क्या ?” हम दोनों के उदास चेहरे देख कर उनको समझ आ गया कि बाघ नहीं दिखा । पापा ने कहा “कोई बात नहीं, फिर चले जाना, रणथम्भोर तो पास ही है । मुझे तो कई बार दिखा है ।” यह सुन कर हम और भी उदास हो गए । थोड़ी देर बाद खाना खाकर सबसे बात करते समय हमने बताया कि हमने और कौन-कौन से जानवर देखे । उनसे बात करते हुए यह एहसास हुआ कि जंगल के अन्य जानवर भी कम महत्वपूर्ण नहीं । रणथम्भोर टाइगर रिजर्व जैसे विश्व विख्यात स्थल पर भी बाघ का न दिखना, एक गंभीर विषय है । इसकी क्या वजह हो सकती है ? विचार करने पर यह समझ आया कि मनुष्य अपनी ज़रूरतों के लिए जंगल काटता जा रहा है जिसकी वजह से सिर्फ बाघ ही नहीं, अन्य पशु-पक्षियों की संख्या भी कम हो रही है । प्राकृतिक संतुलन हेतु इस धरोहर को बचाकर रखना अति आवश्यक है । खैर, हमें उम्मीद थी कि अगली बार जब रणथम्भोर जायेंगे तो बाघ अवश्य दिखेगा । हालाँकि मैं अब भी उस अगली बार की प्रतीक्षा में हूँ ।

• • •

जल-संकट

बिनय कुमार

बहुकार्य कर्मचारी



पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीव-जंतुओं के जीवन-यापन के लिए अनेक प्रकार के संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। उन्हीं संसाधनों में से एक संसाधन जल भी है। इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। हमें पता है कि पृथ्वी पर तीन भाग जल एवं एक भाग स्थल है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि इस तीन भाग में से मात्र एक प्रतिशत भाग ही पेय जल है, या हमारे उपयोग करने लायक है, जो कि बहुत कम है। हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारा शरीर पाँच चीजों (हवा, अग्नि, आकाश, जल एवं भूमि) से बना है। अगर इन पाँचों में से किसी का संतुलन बिगड़ता है तो इसका सीधा असर हमारे शरीर पर पड़ेगा।

जल संकट उत्पन्न होने के मुख्य कारण पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, बढ़ती हुई जनसंख्या, शहरीकरण, लोगों द्वारा प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना, नदियों को दूषित करना इत्यादि हैं। इसका दुष्प्रभाव पूरे मानव जाति के साथ निर्दोष वन्य जीव-जंतुओं पर भी पड़ा है। यहाँ तक कि कई जीव-जन्तु विलुप्त हो चुके हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। आज जल संकट के कारण नदियों, तालाबों, झरनों, झीलों इत्यादि का पानी सूख चुका है और जो बचे हैं उनका जलस्तर बहुत तेजी से घटने के साथ-साथ उपलब्ध जल प्रदूषित भी होता जा रहा है। जल संकट के कारण मानव ही मानव का दुश्मन बना हुआ है। यहाँ तक कि विशेषज्ञों का मानना है कि अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो उसका मुख्य कारण जल ही होगा।

जल संकट को दूर करने तथा इसके घातक दुष्परिणामों से बचने के लिए सरकार के साथ-साथ आम नागरिक के भी कुछ कर्तव्य हैं, क्योंकि हमारे समाज में कोई कार्यक्रम तभी सफल होता है जब आम नागरिक व्यक्तिगत स्तर पर उसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इस संकट को दूर करने के लिए सरकार द्वारा कुछ उपाय निम्नलिखित हैं :

1. नदियों के दोनों किनारों पर एक किलोमीटर दूरी तक पेड़ लगाया जाना ।
2. जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाना ।
3. कृषि पर जोर दिया जाना ताकि ग्रामीणों को रोज़गार हेतु शहर न जाना पड़े ।
4. नदियों को स्वच्छ रखना तथा इन्हें प्रदूषित करने पर कठोर दंड का प्रावधान किया जाना ।

आम नागरिक के कुछ कर्तव्य :

1. एक पेड़ को काटने पर एक से अधिक पेड़ लगाना ।
2. वर्षा जल का संग्रह करना ।
3. जल को व्यर्थ बर्बाद न करके उसका सदुपयोग करना ।
4. जल संरक्षण से संबंधित सरकारी योजनाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना ।

यदि उपर्युक्त उपायों को धरातल पर उतारा जाए तो वह दिन दूर नहीं जब सूखे कुओं, तालाबों, झरनों, झीलों इत्यादि में जल ही जल होगा और इसके परिणामस्वरूप कोई भी जीव-जन्तु जलाभाव में प्यासा नहीं मरेगा ।

जल ही जीवन है !

जल है तो कल है !!

• • •

“द बकेट लिस्ट”

श्रीमती मोनिका दवे

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

क़रीब एक दशक पहले रॉब राइनर द्वारा निर्देशित फ़िल्म ‘द बकेट लिस्ट’ आयी थी । यह फ़िल्म अलग-अलग पृष्ठभूमि से आये दो व्यक्तियों, कार्टर चैम्बर्स नामक साधारण मैकेनिक और एडवर्ड कोल नामक अरबपति हेल्थ केयर टायकून की कहानी है । फेफड़ों के कैंसर के कारण अपने-अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँचे इन दो व्यक्तियों की मुलाकात एडवर्ड के अस्पताल के जनरल वार्ड में होती है । कार्टर एक महत्वाकांक्षी और जिंदादिल व्यक्ति है और अपने सपनों एवं इच्छाओं को वह कागज़ पर लिखकर एक फेहरिस्त में दर्ज करता रहता है । डॉक्टरों से यह ज्ञात होने पर कि अब उसके पास जीवन का केवल अंतिम एक वर्ष शेष है, कार्टर कभी यूँ ही बनाई गई ‘बकेट लिस्ट’ को निराश हो कर फेंक देता है । एडवर्ड के हाथ वह मुड़ा-तुड़ा कागज़ का टुकड़ा लगता है । अगले दिन एडवर्ड सिलवटें खोलकर वह कागज़ कार्टर के हाथ में थमाते हुए उससे यह ‘बकेट लिस्ट’ पूरा करने का आग्रह करता है और इसमें आने वाले खर्च को वहन करने का प्रस्ताव रखता है । और शुरू होती है उन दोनों के विश्व भ्रमण की शायद अंतिम यात्रा । परिजनों के विरोध के बावजूद दोनों अपने जीवन की अंतिम छुट्टियां मनाने निकल पड़ते हैं ।

अपने जीवन के इस अंतिम वर्ष में कैसे ये दो लोग अपने लगातार बिगड़ते स्वास्थ्य की चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी

नयी-पुरानी, छोटी-बड़ी इच्छाओं और सपनों को पूरा करने का प्रयास करते हैं, यह बड़े मनोरंजक और संवेदनशील ढंग से इस फ़िल्म में दर्शाया गया है। वे दोनों साथ में स्काई डाइविंग करते हैं, हाथ पे टैटू बनवाते हैं, ताजमहल देखकर उसकी सुन्दरता को सराहते हैं, नेपाल में माउंट एवरेस्ट देखते हैं, तंज़ानिया में लायन सफ़ारी और चीन की विशाल दीवार में मोटरसाइकिल चलाने का रोमांच अनुभव करते हैं, एक दुर्लभ कॉफी का अनोखा स्वाद चखते हैं... अंततः अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के चलते ऑपरेशन के लिए जाने से पहले कार्टर अपनी 'बकेट लिस्ट' की एक प्रविष्टि "आँखों से आंसू निकल आये तब तक लगातार हँसना" को काट देता है और एडवर्ड से इसे अकेले ही पूरा करने को कहते हुए उस से विदा लेता है ...

यह फिल्म देखने के बाद अनायास ही विचार आया कि मेरी बकेट लिस्ट का क्या ? मुझे एहसास हुआ कि न जाने ऐसे कितने अनुभव, सपने, इच्छाएं हैं जिन्हें पाने या पूरा करने की दिशा में मैंने प्रयास नहीं किया। बहाने अनेक हैं, कभी आलस्य तो कभी अपनी तथाकथित व्यस्तता, कभी परिस्थितियों की प्रतिकूलता तो कभी आवश्यक संसाधनों का अभाव। कई बार अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में हम आरम्भिक कदम तक नहीं उठाते, सही समय की प्रतीक्षा में। निराधार आशंकाओं या मार्ग में आने वाली बाधाओं की कल्पना करके इस आरंभिक कदम को हम अनिश्चित काल के लिए टालते रहते हैं। ऐसा करना कहाँ तक उचित है ?

आइये खुद से कुछ सवाल पूछें। जैसे कि...

यदि कल ही मृत्यु आने वाली हो तो हम इस उपलब्ध समय में क्या करना चाहेंगे ?

यदि हमारे पास सीमित समय, पैसा और संसाधन हों तो हम उन्हें कैसे उपयोग करना चाहेंगे ?

ऐसा क्या है जो हम हमेशा से करना चाहते थे पर अब तक कर नहीं पाए ?

वो कौन-से स्थान हैं जहाँ हम जाना चाहते हैं पर अब तक जा नहीं पाए ?

जीवन में कौन-से ख़ास पल, कौन-से अनुभव हम महसूस करना चाहते हैं ?

अपने जीवन के कौन-से सपने हम अब तक पूर्ण नहीं कर पाए ?

प्रत्यक्ष, सजीव रूप से हम क्या देखना चाहते हैं ?

कौन-से कौशल हम सीखना चाहते हैं ? किन गतिविधियों में हम भाग लेना चाहते हैं ?

हमारी परिभाषा के अनुसार सबसे अधिक अर्थपूर्ण जीवन जीने के लिए हम क्या करना आवश्यक समझते हैं ? वगैरह वगैरह ...

फ़ेहरिस्त बहुत लम्बी है । आइये इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ कर हम उन्हें अपनी अग्रता क्रम में अपनी-अपनी 'बकेट लिस्ट' में दर्ज करें तथा बिना समय गंवाए, जीवन में जो मिला उसके लिए कृतज्ञता का भाव मन में रखते हुए अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाएं । बारिश की बूंदें अपने आप में भले ही सूक्ष्म हों, परन्तु निरंतर पड़ती फुहारों से जैसे धीरे-धीरे बड़ी नदी का बहाव बनता है, वैसे ही हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का बल रखते हैं, आवश्यकता है बस प्रयासों का सिलसिला बिना रुके जारी रखने की...

जीवन की अनिश्चितता एवं शरीर की नश्वरता से हम में से

कोई भी अनभिज्ञ नहीं । फिर भी हम सभी कहीं न कहीं इस तथ्य को नज़र-अंदाज़ करते हुए अनवरत यंत्रवत नित्यचर्या में जुटे रहते हैं । जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को नज़र-अंदाज़ करते हुये कुछ बड़ा पाने की होड़ में हम लगातार लगे रहते हैं । अपने द्वारा निर्धारित गंतव्य प्राप्त करने पर मिलने वाली किसी खुशी की उम्मीद में हम मार्ग में मिलने वाली अनेक छोटी-छोटी खुशियों से वंचित रहते हैं । हमने जीवन में जो पाया उसके प्रति कृतज्ञ होने के बजाय जो पाना शेष है उसकी दिशा में बेतहाशा दौड़ते हुए अपनी स्वयं की और अपने प्रियजनों की छोटी-छोटी इच्छाओं को पूरा करने के लिए समय नहीं निकाल पाते या यूँ कहिये कि सही समय की प्रतीक्षा करते रहते हैं ।

वास्तव में हमारे द्वारा परिभाषित यह सही समय तो कभी आता ही नहीं । समय निर्बाध बहता रहता है और कुछ भी अच्छा करने के लिए अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं । कार्टर और एडवर्ड की कहानी में तो एक वर्ष का समय था, पर जीवन का क्रम इतना अनिश्चित है कि क्या पता कौन सा क्षण जीवन का अंतिम क्षण हो । आइये, सही समय की प्रतीक्षा किये बिना, अवसरों को पहचानें और इस अमूल्य जीवन के खोने की कगार तक पहुँचने से पहले अपनी-अपनी 'बकेट लिस्ट' बनायें और उसे पूरा करने के प्रयास में जुट जाएं ।

• • •

सुन

याशिका सिंगला

सुपुत्री श्री पवन सिंगला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



सुन ओ परी मेरी
जा, उड़ जा सितारों के परे
उड़ान ऊँची तो भर
पर नज़र तुझे ना लगे
जा चिरैय्या जा
बादलों के पीछे समा
खुशियाँ तेरे रास्ते आएँ
दुःख ना हो वहाँ
जा, उधर जा
गुनगुना कर चलती जा
बना अपनी एक राह
ज़िंदगी को कुछ करके दिखा
जा बिटिया जा
बाबुल से दूर जा
तुझ संग हमेशा मेरी दुआ
पर सोचता हूँ, कि अनमोल रतन

मुझको कैसे मिला
मैं नहीं तेरा
जितना तू है मेरा
जा, जिगर के टुकड़े
अपनी पहचान बना
कुछ बड़ा बन
अपने बदनसीब कल को भुला
जा मेरी खुशी
जा मेरी मुस्कान
मुझसे दूर चली जा ।

• • •

बैंक समाधान विवरण : लेखापरीक्षा की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण दस्तावेज

राजीव कुमार गर्ग

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

परिचय :

बैंकबुक तथा पासबुक के शेष में होने वाले अंतर को मिलाने के लिए जो विवरण तैयार किया जाता है, उसे बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement) कहा जाता है ।

प्रायः प्रत्येक व्यवसायी किसी न किसी बैंक में एक चालू खाता (Current Account) ज़रूर रखता है । उसमें वह नकद रुपया तथा चैक जमा करता है और निकासी करता है । व्यवसायी किसी को भुगतान के रूप में चैक भी देता है । चैक पाने वाले व्यक्ति को बैंक के द्वारा रुपया दिया जाता है ।

बैंक एवं व्यवसायी के बीच होने वाले लेन-देन को व्यवसायी के द्वारा जिस बही में लिखा जाता है उसे बैंकबुक कहा जाता है तथा बैंक के द्वारा जिस बही में लिखा जाता है उसे पासबुक कहा जाता है ।

चूँकि बैंकबुक और पासबुक दोनों बहियों में एक ही तरह के लेन-देन को दिखाया जाता है इसलिए दोनों बहियों का शेष एक समान होता है और होना भी चाहिए । परन्तु किसी खास तिथि पर जब दोनों बहियों को मिलाया जाता है तो सामान्यतः दोनो बहियों के शेष में अंतर पाया जाता है । दोनो बहियों के शेष में अंतर क्यों हुआ इसे ही ज़ाहिर करने के लिए व्यवसायी के द्वारा समय-

समय पर एक विवरण तैयार किया जाता है जिस बैंक समाधान विवरण कहा जाता है ।

बैंक समाधान विवरण की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ हैं :

- बैंक समाधान विवरण बैंकबुक शेष एवं पासबुक शेष के मिलान हेतु तैयार किया जाता है । यह सिर्फ बैंकबुक शेष को सिद्ध करने की विधि है ।
- बैंक समाधान विवरण को किसी तिथि विशेष पर तैयार किया जा सकता है । साधारणतया इस महीने के अंत में तैयार किया जाता है ।
- बैंक समाधान विवरण व्यवसायी द्वारा तैयार किया जाता है न कि बैंक द्वारा ।
- बैंक समाधान विवरण बनाने का उद्देश्य सिर्फ शेषों का मिलान करना ही नहीं अपितु त्रुटियों या भूलों के कारणों का पता लगाना भी है ।

बैंकबुक और पासबुक के शेष में निम्नलिखित कारणों से अंतर हो सकता है :

1. चैक काटा गया परन्तु भुगतान के लिए बैंक में प्रस्तुत नहीं किया गया ।
2. चैक जमा किया गया परन्तु बैंकबुक में चढ़ाया नहीं गया ।
3. चैक जमा किया गया परन्तु वसूली नहीं हुई ।
4. ग्राहक के बैंक के द्वारा चैक अनादृत किया गया ।
5. चैक प्राप्त हुआ परन्तु वसूली के लिए बैंक में भेजा नहीं गया ।
6. ग्राहक द्वारा रकम सीधे जमा की गई ।

7. बैंक ने गलत डेबिट / क्रेडिट कर दिया ।
8. बैंक द्वारा ब्याज दिया गया अथवा ब्याज लिया गया ।
9. बैंक द्वारा खर्च / कमीशन लिया गया ।

लेखापरीक्षा में बैंक समाधान के निरीक्षण की आवश्यकता एवं महत्व निम्नलिखित हैं :

- रोकड़ बही एवं पासबुक में की गयी भूलों और त्रुटियों का पता लगाना तथा इन्हें दूर करने के उपाय ढूँढना ।
- रोकड़ एवं बैंक का लेन-देन करने वाले कर्मचारी पर नियंत्रण रखना ।
- छल-कपट एवं कोषों में गबन या दुरुपयोग की संभावना को कम करना ।
- चैकों के संग्रहण/वसूली में होने वाले विलम्ब को चिन्हित करना ।

• • •

अदम्य क्षमता

राजीव रंजन सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संभवतः आज हम मानव सभ्यता के विकास के उच्चतम शिखर के करीब हैं। गुफाओं में रहने से लेकर, आज की संचार क्रांति तक का सफ़र, कुछ खास लोगों के अथक प्रयासों के कारण ही सहज हो पाया है। आजकल हर क्षेत्र में कुछ नए आयाम बनते हैं और पुराने टूटते हैं। वो हमारे विकास के लिए एक सहज प्रक्रिया है। यहाँ मैं खेल-कूद के क्षेत्र से एक महान व्यक्तित्व के बारे में चर्चा कर रहा हूँ जो पेशे से एक डॉक्टर थे। आज अगर हम दौड़ प्रतियोगिताओं की बात करें तो आपके ज़ेहन (मन) में अनायास जमैका, केन्या और इथोपिया का ख़्याल आएगा। लेकिन यह प्रसंग थोड़ा पहले का है और इन तीन देशों से संबन्धित भी नहीं है। पचास के दशक की शुरूआत में यह कहा जाता था कि एक मील की दूरी चार मिनट में दौड़कर पूरी करना किसी मानव के लिए संभव नहीं है। यह धारणा क्यों और कैसे बनी, इसका ज़िक्र यहाँ उतना मायने नहीं रखता लेकिन यह हमारे धावकों के लिए मानसिक अवरोध ज़रूर था।

सबसे पहले इस धारणा से इंग्लैंड के रोजर बैनिस्टर ने 1952 में निजात दिलाई। उनके समकालीन धावकों के अथक प्रयासों के बाद भी जब यह संभव नहीं हो पाया तो यह धारणा और मज़बूत बन गई। पेशे से डॉक्टर होने के कारण शायद रोजर बैनिस्टर को मानसिक क्षमताओं की शारीरिक क्षमताओं पर श्रेष्ठता ज्ञात होगी।

शायद उन्हें यह उम्मीद तभी बन गई थी जब हेलसिंकी के ओलम्पिक में उन्होंने यह दूरी तय की थी ।

यह जानकर अब आश्चर्य नहीं लगता कि रोजर बैनिस्टर के बाद एक साल के अंदर 37 धावकों ने यह कर दिखाया । इस दृष्टांत से दो धारणाएँ बनती हैं, पहली यह कि मानसिक अवरोध, शारीरिक क्षमता को प्रभावित करता है एवं दूसरी यह कि, मानव अपनी अदम्य क्षमताओं से किसी भी चीज़ पर विजय प्राप्त कर सकता है ।

• • •

स्मृति

रीना अभ्यंकर

पर्यवेक्षक

भारतीय होने के नाते 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस एवं 26 जनवरी, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय त्यौहार मनाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। भारत सरकार के कार्यालय में होने के नाते प्रति वर्ष इन राष्ट्रीय त्यौहारों को कार्यालय सदस्यों के साथ मनाना मानो मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

जनवरी 2012 में मैं दक्षिण कोरिया घूमने गई थी। मेरे मेज़बान, जो कि एक भारतीय थे, हुंडई कंपनी में कार्यरत थे। उलसान, दक्षिण कोरिया में मैं उनकी कंपनी के अपार्टमेंट में रुकी थी। 24 जनवरी, रात के खाने के बाद हम सब गपशप कर रहे थे। बातचीत के दौरान मैंने कहा कि शायद 1985 के बाद यह पहला गणतन्त्र दिवस होगा जब मैं ध्वजारोहण समारोह में अनुपस्थित रहूँगी। मुझे इस बात का दुःख है। मेरे मेज़बान चुप रहे। दूसरे दिन कार्यालय से वापस आने पर हमारी जो बातचीत हुई, उसके कुछ अंश मैं आपके साथ साझा करना चाहूँगी।

शैलेश जी (मेज़बान) : रीना जी, आप यहाँ 26 जनवरी के दिन भारत का गणतन्त्र दिवस मनाना चाहेंगी ?

रीना : ज़रूर।

शैलेश जी : मैंने अपने अधीनस्थ अधिकारी के इस अवसर पर आयोजन करने के लिए कहा है। व्यवस्था हो जाने पर वे हमें अवगत करेंगे।

रीना : पर हम यह उत्सव कहाँ मनाएंगे ?

शैलेश जी : हमारे अपार्टमेन्ट्स के तहखाने में स्थित सांस्कृतिक सभागृह में ।

रीना : वहाँ क्यों ? अपार्टमेन्ट्स के परिसर में क्यों नहीं ?

शैलेश जी : अगर हम इस देश में किसी और देश का राष्ट्रीय त्यौहार मनाना चाहते हैं तो हमें बंद परिसर में कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति मिलती है ।

यह सुनकर मैं खुश हो गई कि मैं कोरिया में भारतीय गणतन्त्र दिवस मनाऊंगी । तिरंगे को सलामी दूंगी । राष्ट्रगान गाऊंगी ।

26 जनवरी 2012 के दिन सुबह छः बजे तापमान (-) 10 डिग्री था । शैलेश जी, उनके परिजन और मैं अपार्टमेन्ट के तहखाने में स्थित सांस्कृतिक सभागृह में पहुँचे । करीब पचास भारतीय स्वजन हमारे साथ भारतीय गणतन्त्र दिवस मनाने के लिए मौजूद थे । रंग-बिरंगे गुब्बारे, रिबन आदि से हॉल सुशोभित था । तिरंगा देखकर मैं गद-गद हो गई । जान-पहचान न होने के बावजूद, सभी ने एक दूसरे को गणतन्त्र दिवस पर बधाईयाँ दीं । एक ऐसा देश जहाँ कोरियन भाषा का चलन है, बहुत कम लोग अंग्रेजी जानते हैं, वहाँ मैं उपस्थित सदस्यों के साथ हिन्दी में बात कर रही थी । विदेश में देशी भाषा... अलग ही अनुभूति...

करीब 6:30 बजे शैलेश जी, जो कि हुंडई कंपनी के ऑफ-शोर डिवीज़न के जनरल मैनेजर थे, उन्होंने ध्वजारोहण किया । सभी ने मिलकर राष्ट्रगान गाया । भारत के प्रधानमंत्री जी का संदेश पढ़ा गया । अनजान लोगों के बीच में भी मैं अपनापन महसूस कर रही थी । विदेश जाकर अपना देश, अपने लोग कुछ ज़्यादा ही याद आते हैं ।

अल्पाहार करके सब ने विदाई ली, कार्यालय सदस्यों को आठ बजे कार्यालय जो पहुँचना था । आज भी यह खूबसूरत स्मृति मेरे मानसपटल पर यथावत अंकित है ।

• • •

प्यारी हिन्दी

रचना सिंह

उप-महालेखाकार



जन-जन की भाषा है ये हिन्दी,
देश को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी ।

सुंदर है, मनोरम है, सरल है,
ओजस्विनी और अनूठी है ये हिन्दी ।

पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी ।

अंग्रेजी से इसका कोई बैर नहीं हैं,
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी ।

हिन्दुस्तान की गौरव गाथा है ये हिन्दी,
जिसने पूरे विश्व को राह दिखाई है यह है हिन्दी ।

एकता की अनुपम परम्परा है ये हिन्दी,
जीवन की परिभाषा है ये हिन्दी ।

यूँ तो देश में कई भाषाएँ और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिन्दी है ये हिन्दी ।

पाथेय है, प्रवास है, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी ।

• • •

माँ

रङ्गीना मोरीसवाला

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



माँ ! मेरी प्यारी माँ, न्यारी न्यारी माँ, जीवनदात्री, जीवन रक्षक अनेरी माँ,
जब प्यार को अपने बाँट न सका रब,
तो बनाई मुस्कुराती प्यार की मूरत माँ,
खुद सोकर गीले में, सूखे में सुलाती, बेमिसाल, अनुपम, अप्रतिम माँ,
होठों पर तुतले-तुतले बोल रखकर, बोलना सिखलाने वाली माँ,
देकर सहारा अपनी उँगलियों का, चलना सिखलाने वाली माँ,
नन्हें-नन्हें खिलौनों में, खेलना सिखलाकर पुचकारती माँ,
अपने बच्चों की तरक्की में, फूले न समाती, खुशहाल माँ,
मेरे वजूद और अस्तित्व को, बुलन्दियों पर पहुँचाती माँ,
जिंदगी के हर मोड़ पर पथदर्शक और राहबर मेरी माँ,
जीवन के निराश अंधेरे में आशा के दीप जलाने वाली माँ,
झरने की तरह अविरत बहती, पत्थरों से टकराती माँ,
सूरज की तरह तेज, चाँद सी शीतल, सागर सी गहरी,
चट्टानों सी मजबूत माँ,
दूर से मुझ को आता देख, फूले न समाती माँ,
और कभी-कभी न आने पर, आग बबूला होती माँ,

पापा के गुस्से को पीकर, स्नेह जल बरसाने वाली माँ,
मैं तो क्या ! बच्चों के मेरी जान से प्यारी माँ,
लेकिन, किन्तु, परंतु, अफ़सोस ! ! अपनी बीमारी और बुढ़ापे में,
कुछ क्रूर बच्चों की अभागी माँ,
अपने ही घर से निकाली जाती, वृद्धाश्रम में खदेड़ी जाती माँ,
फिर भी अपने नयनों से ममता ही लुटाती माँ,
बच्चों की प्रतीक्षा में जान से जाती माँ,
इसलिए है रज़ीना की सीख यही,
“गर करोगे खिदमत माँ की, जन्नत मिलेगी यहीं.”

• • •

कर्तव्य पथ पर

विनीता राजीव सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हम अपने आपको कैसे परिभाषित करते हैं, इस बात की भूमिका है कि अपने जीवन में या अपने कार्यालयीन समय में हम कैसे व्यवहार करते हैं। कार्यालय के शुरू के दिनों की बात है, कार्यालय की एक मीटिंग में सब जमा थे। श्री जे. पी. दूधिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी जो उस समय बिल्स में डी.डी.ओ. के रूप में बहुत सालों से पदस्थ थे, उनको किसी ने कहा कि इतने साल आप सुबह 9.30 बजे ऑफिस आकर शाम को 8.00 बजे तक बैठे रह कर काम करते हैं, अब आप काम करना थोड़ा कम कर दो और परिवार के साथ समय बिताओ। उनका जवाब मुझे आज भी कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा सा लगता है। उन्होंने कहा, “मैं किसी और के नहीं, अपने internal commands obey करता हूँ। सरहद पर खड़ा एक सिपाही जितना अपने फर्ज के लिए अपने को ज़िम्मेदार समझता है, मैं उतनी ही ज़िम्मेदारी अपनी समझता हूँ।”

जब मैं प्रशासन अनुभाग में अनुभाग अधिकारी के रूप में कार्यरत थी, मुझे याद है कि काम की व्यस्तता में अथवा समयाभाव में एक काम से थोड़े असंतुष्ट तत्कालीन उप-महालेखाकार (प्रशासन) ने कहा था कि जब हम पी. सी. फ़ाइलों पर काम करें तो इस सजगता के साथ करें कि फ़ाइल नहीं, सामने कोई आदमी या कर्मचारी है, जिससे हम व्यवहार कर रहे हैं। यांत्रिक रूप से लिए जाने वाले काम को कैसी सुंदर परिभाषा उन्होंने दी। मुझे अब भी

जब यह बात याद आती है, मेरी कोशिश होती है कि मैं मामले को और भी सजगता व संवेदनशीलता से देखूँ ।

एक और वाक्या है, जो यहाँ उल्लेखनीय है, तत्कालीन प्रधान महालेखाकार ने मुझे एक बार बुलाकर कहा था, काम हमें कोई भी मिले, उसे आत्मसात करना चाहिए । काम को ऐसे पूर्णता से करो जैसे तुम्हारे बाद उसे कोई देखता न हो और जो तुमने किया वह अंतिम है, और फिर सोचो कि इसके परिणाम के लिए तुम ही जिम्मेदार हो ।

मुड़ कर 16 वर्षों को जब भी देखती हूँ, मार्ग प्रशस्त करते हुए ऐसे बहुत से दीपक हैं, जिन्होंने कर्तव्य पथ को मेरे लिए सुगम व सहज बनाया है और सतत प्रेरणा दी है । अपने काम के प्रति कृतज्ञ होना सीखें, यह सबसे बड़ी बात है । जब हम इस बात के लिए आभारी होते हैं कि हमारे पास काम है, हम अपना अधिकतम योगदान उसके लिए देते हैं । जीवन के हर क्षण में कृतज्ञ होने को इतना कुछ होता है, काम को भी उनमें से एक मानें और हम देखेंगे कृतज्ञता से भरे हृदय व हाथ से, साधारण काम में भी नये आयाम का सृजन हो सकता है ।

• • •

महातीर्थ (सैल्यूलर जेल)

विद्या अय्यर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

यह तीर्थ महातीर्थ का है,
मत कहो इसे कालापानी,
तुम सुनो, यहाँ की धरती के
कण-कण से गाथा बलिदानी

— गणेश दामोदर सावरकर

मैं जनवरी 2019 में छुट्टी यात्रा रियायत भत्ता (एल.टी.सी.) लेकर परिवार के साथ अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर गई थी, वहाँ पर सैल्यूलर जेल देखा। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह पर बनी सैल्यूलर जेल कालापानी के नाम से विख्यात है। इसे कालापानी इसलिए कहा जाता था क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों पर यहाँ बहुत कहर ढाया जाता था। भारत के इतिहास का ये काला अध्याय है। अंग्रेजों द्वारा बनाए गए इस जेल में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को सज़ा के तौर पर रखा जाता था। बटुकेश्वर दत्त और वीर सावरकर जैसे अनेक सेनानियों ने यहाँ सज़ा काटी है। सुदूर द्वीप होने की वजह से यह विद्रोहियों को सज़ा देने के लिए अनुकूल जगह समझी जाती थी। उन्हें समाज से अलग करने के लिए ही यहाँ नहीं लाया जाता था, बल्कि उन्हें जेल निर्माण, बन्दरगाह निर्माण आदि कामों में भी लगाया जाता था।

सैल्यूलर जेल का निर्माण सन् 1896 में प्रारम्भ हुआ और

सन् 1960 में यह बनकर तैयार हुई । इस जेल की 7 शाखाएँ थीं और बीचोंबीच एक टावर था । इस टावर से ही सभी कैदियों पर नज़र रखी जाती थी । ऊपर से देखने पर यह साइकल के पहिये की तरह दिखाई देता था । अब तीन शाखाएँ बची हैं । प्रत्येक शाखा तीन मंज़िल की बनी थी । इनमें कोई शयनकक्ष नहीं था और कुल 698 कोठरियाँ थीं, प्रत्येक कोठरी 15 x 8 फीट की थी । एक कोठरी का कैदी दूसरी कोठरी के कैदी से कोई संपर्क नहीं रख सकता था । कालापानी की सज़ा क्रूरता की पराकाष्ठा थी ।

अंग्रेज़ों ने अत्याचार करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी थी । कई लोगों को फाँसी पर लटकाया गया । तोपों के मुंह पर बांधकर उन्हें उड़ाया गया । उन्हें परिवार से दूर रखा जाता था । 15 x 8 फीट की कोठरी में एक मिट्टी का बर्तन खाना खाने के लिए और दूसरा बर्तन प्रसाधन के लिए दिया जाता था । मैंने वीर सावरकर की कोठरी देखी, अंदर थोड़ी देर खड़ी रही... घुटन सी होने लगी । दिल थम सा गया... कोठरी के सामने फाँसीघर था । तीन लोगों को साथ में फाँसी दी जा सके, ऐसी व्यवस्था अंग्रेज़ों ने की थी । अब भी फाँसीघर उसी हाल में मौजूद है । नीचे की ओर दो बड़े दरवाज़े खुल जाते हैं और वहाँ तीन फंदे लगाए हुए हैं । मैं खुद उसी जगह खड़ी रही जहाँ लोगों को फाँसी के लिए ले जाया जाता था । लेकिन इतनी यातनाएँ, दुःख, अकेलापन सहकर, मजदूरी करने के बाद सड़ा हुआ भोजन, अशुद्ध पानी, कोल्हू से नारियल तेल निकालना जैसी अनेक प्रकार की सज़ाओं के बावजूद उन लोगों का गुस्सा, जुनून और हिम्मत नहीं टूटी थी । ये जो देश को आज़ाद कराने की भावना इन स्वतंत्रता सेनानियों में थी वह जानकर मुझे बहुत गर्व हुआ ।

अंग्रेजों द्वारा अत्याचार करने के कारण 1930 में यहाँ कैदियों ने भूख हड़ताल कर दी थी, तब महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसमें हस्तक्षेप किया था । 1937-38 में यहाँ से कैदियों को स्वदेश भेज दिया गया था । सबसे पहले 200 विद्रोहियों को जेलर डेविड बैटी और जेम्स पैटीसन की सुरक्षा में यहाँ लाया गया था । बाद में 753 विद्रोहियों को करांची से लाया गया था । भारत, बर्मा और दूसरे देशों से यहाँ सेनानियों को बतौर सज़ा लाया गया था । यहाँ से भाग जाना असंभव था । जेल की बाहरी दीवार जानबूझ कर ही छोटी रखी गई थी क्योंकि चारों ओर समुद्र था । इस भयावह सज़ा को भोगने के सिवा उन लोगों के पास कोई और रास्ता नहीं था । सावरकर जी ने जो लिखा है कि यह तीर्थ महातीर्थों का है, ये बात यहाँ जाकर महसूस होती है ।

जापानी शासकों ने अंडमान पर 1942 में कब्ज़ा किया और अंग्रेजों को वहाँ से मार भगाया । उस समय अंग्रेज़ कैदियों को सैल्यूलर जेल में बंद कर दिया गया था । उन दौरान नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भी वहाँ का दौरा किया था । सात में से दो शाखाओं को जापानियों ने नष्ट कर दिया था । द्वितीय विश्वयुद्ध खत्म होने के बाद 1945 में फिर अंग्रेजों ने यहां कब्ज़ा जमाया । भारत को आज़ादी मिलने के बाद इसकी दो और शाखाओं को ध्वस्त कर दिया गया । शेष बची तीन शाखाएँ और टावर को 1969 में राष्ट्रीयस्मारक घोषित कर दिया गया... यही थी गाथा अंडमान में सैल्यूलर जेल की जो मैंने देखी, सुनी और आपको बताई ।

• • •

हमारे कार्यालय का 'कला-पर्व'

श्रीमती विना यादव

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



मैं गुजरात लेखापरीक्षा भवन में गत 3 वर्षों से कार्यरत हूँ, परंतु फ़रवरी 2019 में मुझे पहली बार हमारे कार्यालय द्वारा 'टैगोर भवन' में आयोजित 'कला-पर्व' में भाग लेने का अनोखा अनुभव हुआ। यह हमारे कार्यालय का वार्षिक कार्यक्रम था जिसे 'कला-पर्व' का नाम दिया गया था। स्कूल के समय से ही मैं नृत्य और गान दोनों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थी। लेकिन स्कूल छोड़े इतने वर्ष बीत गए कि मैं भूल ही चुकी थी कि मैंने कभी मंच पर गाना गाया था या नृत्य भी किया था।

जब मुझे अपने कार्यालय के वार्षिक कार्यक्रम के बारे में पता चला तो खुशी भी बहुत हुई और मन में थोड़ी शंका भी उत्पन्न हुई कि कार्यालय में नृत्य-संगीत में भाग लेना उचित होगा या नहीं? मैंने अनेक लोगों से इस बारे में विचार-विमर्श किया और इस निर्णय पर पहुंची कि मुझे भी इस कार्यक्रम में अवश्य भाग लेना चाहिए।

पहले ही दिन जब हम ऑडिटोरियम पहुंचे तो वहाँ कोरियोग्राफर महोदय को आमंत्रित किया गया था। नृत्य के भी अलग-अलग वर्ग थे जैसे - घूमर, देशभक्ति गीत पर आधारित नृत्य व गरबा नृत्य आदि। मैंने घूमर और देशभक्ति नृत्य में अपना नाम लिखवा दिया। उससे अगले दिन मैं, कैसे लोग अभिनय का अभ्यास करते हैं, ये देखने

के लिए गई। नाटक की तैयारी हेतु एक श्रीमान तरल दवे जी को आमंत्रित किया गया था। मैं दर्शक दीर्घा में बैठी हुई थी, तभी उन्हें नाटक हेतु एक कलाकार की आवश्यकता पड़ी और मेरे रुचि दिखाने पर मुझे भी इस नाटक के लिए चुन लिया गया।

बस फिर उसके बाद 3:30 से 4:30 बजे तक हमें तैयारियाँ कराई जाती। नृत्य में अन्य कार्यालय जो लेखापरीक्षा भवन में ही स्थित हैं, उन सब के सदस्य भी शामिल थे। अधिकांश लोग मेरे लिए एकदम नए थे और जिन्हें थोड़ा बहुत जानती थी उनसे भी कभी पूर्व में बातचीत नहीं होती थी। सभी लड़कियाँ मेरी जल्दी ही मित्र बन गईं। कॉलेज छूटने के बाद ये बहुत ही शानदार अनुभव था। ऐसा लग रहा था जैसे कि एक बार फिर से स्कूल में दाखिला ले लिया हो। संगीत और नृत्य मुझे बचपन से ही पसंद थे। परन्तु घर-परिवार और कार्यालय की व्यस्तता में, मैं भूल ही चुकी थी कि संगीत, नृत्य कभी मेरे जीवन में रहा भी था।

इसके अलावा जिस कार्यक्रम की तैयारी में मुझे बहुत आनंद आया, वह था 'हिन्दी नाटक' जिसका नाम था 'वो कौन थी'। नाटक की तैयारी के लिए बाहर से जिन अनुभवी सज्जन को आमंत्रित किया गया था, उन्होंने हमें एक चीज़ सिखा दी थी कि एक ही तरह की पंक्ति को विभिन्न भावों के साथ अलग-अलग प्रकार से कैसे बोलें और झूठ-मूठ कैसे हँसें। कार्यक्रम प्रारंभ होने के पाँच दिन पूर्व तक भी हमारे नाटक की कोई तैयारी नहीं थी। कई लोग तो संशय में थे कि नाटक किया भी जाए या नहीं। अंत में सबने मिलकर निर्णय लिया कि हम नाटक ज़रूर करेंगे। हम सब ने मिलकर उस नाटक की बिल्कुल अलग कहानी लिखी और नाम रखा 'मेहता जी पकड़े गए'। यह एक हास्य नाटक था जिसकी तैयारी के दौरान हम सब खूब हँसे और बहुत मजा

आया । हमारे इस नाटक को दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया । इस नाटक को पूरा करने के लिए हमारी उप-महालेखाकार महोदया ने हमें बहुत प्रोत्साहित किया व स्वयं भी इसमें भाग लिया । वास्तव में हमारे कार्यालय का 'कला-पर्व' न सिर्फ एक वार्षिक कार्यक्रम था अपितु इससे हममें एक नयी ऊर्जा का संचार हुआ । नित्य प्रतिदिन के कार्यों में उलझे, हम जो मशीन रूपी जीवन जी रहे थे, उसमें नई स्फूर्ति आयी व साथ ही सभी कार्यों को करने के लिए एक नई ऊर्जा मिली ।

इस अनोखे अनुभव के लिए कार्यालय ने हम सभी प्रतिभागियों को जो प्रोत्साहन और अवसर दिया, उसके लिए मैं इस लेख के माध्यम से कार्यालय का धन्यवाद करती हूँ ।

ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अगर प्रति एक या दो वर्ष में आयोजन किया जाए तो कार्मिक अधिक क्षमता से कार्यालय का कार्य कर सकते हैं क्योंकि निरंतर कार्य से काम में नीरसता आना स्वाभाविक है । अतः इस कलापर्व से मेरे जीवन में संगीत व नृत्य का फिर से आगमन हो गया । मैं आज भी संगीत और नृत्य से खुद के जीवन को उमंग से भरा हुआ पाती हूँ ।

• • •

धर्म और हम

शालू गुलाटी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

रामायण एक ऐसा धार्मिक ग्रन्थ है जो हमें जीवन जीने की शैली सिखाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन की कहानी से मिलने वाली हर शिक्षा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। वैसे तो रामायण की हर कथा अपने आप में अनोखी और सम्पूर्ण है, लेकिन जो मेरे दिल के बहुत करीब है, मैं उसे इस लेख के द्वारा आप सब को बताना चाहूँगी। क्योंकि तुलसीदास जी ने बहुत सुन्दर कहा है कि राम कथा को मैं जितना सुनता हूँ और मैं इसे जितना सुनाता हूँ, वह मुझे और भी प्यारी लगती है।

यह कथा है भरत-मिलाप की, जब भरत जी अपने भाई श्री राम को लेने वन में पहुँचे और वापस अयोध्या लौटने का आग्रह करने लगे। श्री राम अपने पिता को दिया वचन तोड़ कर उनके साथ जाने से इनकार कर रहे थे। दोनों ही भाई अपनी-अपनी बात लेकर बैठे थे। तब निर्णय के लिए एक उपाय निकाला गया कि इसका फैसला राजा जनक करेंगे। राजा जनक का दरबार लगाया गया। भरत ने अपने प्रेम का वास्ता देकर श्री राम के वापस अयोध्या लौटने का प्रस्ताव रखा और खूब सारे तर्क दिये जैसे कि माँ की गलती की सज़ा बेटे को क्यों मिले, वे श्री राम के बिना नहीं रह सकते आदि। जब श्री राम से पूछा गया तो वे सहज भाव से बोले कि पिता को दिया वचन तोड़ मैं नहीं जाऊँगा क्योंकि पिता को दिया वचन निभाना मेरा धर्म है।

दोनों पक्षों की बात सुनकर राजा जनक ने जो फैसला सुनाया

वह इतना अद्भुत और सुन्दर था कि सबकी आँखों से अश्रु धारा बहने लगी । राजा जनक ने कहा कि धर्म और प्रेम की इस लड़ाई में भरत के प्रेम का स्थान ऊपर है तो विजय भरत की होती है । यह सुनते ही सब खुश हो गये कि अब श्री राम अयोध्या लौट आयेंगे । राजा जनक ने फिर भरत से कहा कि प्रेम ऐसा होना चाहिए जो प्रेमी को कर्तव्य / धर्म निभाने में सहायक हो न कि ऐसा जो प्रेमी को कर्तव्य विमुख कर दे । यह सुनते ही श्री राम मुस्कुरा दिए और भरत अपने भाई को धर्म निभाने के लिए वन में छोड़ कर अयोध्या लौट गए ।

मैंने यह कथा बचपन में सुनी थी और तब भी मुझे बहुत पसंद आई थी । आम जीवन में प्रेम से तात्पर्य है अच्छी भावना, और धर्म वह है जो हमें सही मार्ग पर चलना सिखाता है । आज भी मैं जब कभी जीवन में किसी ऐसी परिस्थिति में होती हूँ जब मुझे दिल और दिमाग में किसकी बात मानूँ, यह सोचना पड़ता है तो मैं इस कथा को याद करती हूँ और निर्णय ले पाती हूँ । जो बात दिल को अच्छी लगे यानि किसी को दुःख न पहुँचाए और मैं अपना कर्तव्य भी निभा सकूँ तो उसे करने में मैं कोई संकोच नहीं करती । जो बात मन को अच्छी न लगे और मेरे कर्तव्य पालन में बाधक न हो तो उसे करना ज़रूरी नहीं समझती हूँ । जब हम सच्चे मन से अपने कर्तव्य का पालन करते हैं तो हमारा मन शांत और संतुष्ट रहता है ।

इसे जब आप अपने जीवन के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े निर्णय लेने के लिए मापदण्ड बना कर सोचेंगे तो जीवन बहुत ही सरल हो जायेगा । मन हमें किसी को दुःख नहीं पहुँचाने देगा और दिमाग हमें अपने धर्म और कर्तव्य के मार्ग से डगमगाने न देगा । चाहे वह आपका कार्यालय हो या घर इसे आप हर निर्णय लेने से पहले याद रखें ।

• • •

वसुधैव कुटुम्बकम्

शिवानंद

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थ : यह अपना है और यह पराया है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं जबकि उदार हृदय वाले लोग तो सम्पूर्ण धरती को अपना परिवार समझते हैं ।

उपर्युक्त श्लोक भारतीय संस्कृति की विश्वबंधुत्व की भावना का प्रतीक है । आज की भौतिकता और स्वार्थपरता के समय में मनुष्य केवल स्वयं तक ही सीमित होता जा रहा है । यह अपनेपन, निज स्वार्थ से लेकर अपने परिवार, अपने समाज, अपने गाँव या शहर, और ज़्यादा से ज़्यादा अपने देश तक पहुँचकर विराम ले लेता है ।

इस स्वार्थपरता का अपना महत्त्व भी है, क्योंकि यदि हम स्वयं के, अपने परिवार के, अपने गाँव और समाज, और अपने देश की प्रगति के लिए कार्य करते हैं तो समाज इसे सम्मान की दृष्टि से देखता है । यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की, अपने परिवार, गाँव, समाज और देश की उन्नति करता है तो लगभग सभी लोग उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे इसीलिए कहा भी गया है :

“आप भले तो जग भला, आप बुरे तो जग बुरा”

इस अपनेपन में समस्या तब उत्पन्न हो जाती है, जब लोग

यह सोचना प्रारम्भ कर देते हैं कि हम स्वयं का अपने घर, परिवार, समाज और देश का विकास तो करेंगे, परंतु किसी अन्य व्यक्ति को, किसी अन्य जाति या समाज के लोगों या किसी अन्य देश को आगे नहीं बढ़ने देंगे, इस प्रकार की सोच रखने वाला व्यक्ति किसी भी व्यक्ति या समाज या देश के लिए कल्याणकारी साबित नहीं हो सकता । इस तरह की स्वार्थपरता से बचा जाना चाहिए ।

लोग अपने परिवार के सभी सदस्यों के भरण-पोषण, पहनावे, शिक्षा, चिकित्सा आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव समर्पित रहते हैं । कभी-कभी लोग परिवार से निकल कर अपने पड़ोसियों की भी मदद कर दिया करते हैं क्योंकि वह उनका पड़ोसी है और वे उसे कष्ट में नहीं देखना चाहते । कुछ लोग किसी अपरिचित की मदद केवल इसलिए कर देते हैं क्योंकि वह व्यक्ति उनकी ही जाति या धर्म से है । कभी-कभी लोग जो किसी दूसरे राज्य में जीविकोपार्जन या अन्य कारणों से गए हैं, उन्हें उनके गाँव, शहर या राज्य का कोई व्यक्ति किसी विपत्ति में मिल जाता है तो वे उस व्यक्ति की मदद केवल इसलिए कर देते हैं कि वह उनके गाँव शहर या राज्य का व्यक्ति है । यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है कि उपरोक्त सभी दृष्टान्तों में व्यक्ति किसी ना किसी की मदद अवश्य कर रहा है, परंतु सभी के विचारों में संकीर्णता का भाव है । वह अपने परिवार, गाँव और शहर के लोगों की मदद तो कर देता है, परंतु वह किसी अन्य असहाय की सहायता के लिए आगे नहीं आता जो उससे संबन्धित या परिचित नहीं है ।

जहाँ पर वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव होता है, वहाँ पर इस तरह की संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं होता । वहाँ पर व्यक्ति के लिए सभी मानव-मात्र एक समान होते हैं, वह संसार के समस्त

प्राणियों के दुःख से दुःखी होता है । वह केवल अपने परिवार, समाज, जाति, धर्म और देश तक ही सीमित नहीं होता अपितु पूरे विश्व को ही अपना परिवार समझता है और संसार के समस्त व्यक्तियों से उसी प्रकार से व्यवहार करता है जैसे उसके अपने परिवार का ही कोई सदस्य हो । ऐसा विश्व प्रेमी व्यक्ति समस्त संसार के लिए कल्याणकारी होता है और उसे पूरा विश्व सम्मान की दृष्टि से देखता है । वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना यदि संसार के प्रत्येक व्यक्ति के अंदर आ जाए तो यह संसार स्वर्ग बन जाएगा, कोई भी व्यक्ति दुःखी नहीं रहेगा और सभी प्रगति के चरमोत्कर्ष पर होंगे ।

हम वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव को ग्रहण करके अपनी दिनचर्या में इसे शामिल कर सकते हैं । कभी-कभी जब लोग बस या ट्रेन से आरक्षित सीटों पर यात्रा कर रहे होते हैं और उसी समय उनका कोई दोस्त या जान-पहचान का कोई व्यक्ति सीट खोजता दिखाई पड़ता है तो लोग अपनी सीट छोड़कर भी उसे बैठाने को तैयार हो जाते हैं, परंतु यदि कोई अपरिचित व्यक्ति उनसे बैठाने के लिए कहता है तो वे साफ़ मना कर देते हैं । काश लोग किसी अपरिचित से भी उसी प्रकार की संवेदना रखते जैसा कि किसी अपने के साथ रखते हैं । ऐसा तभी संभव है जब लोगों को वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाया जाएगा ।

यदि हम सम्पूर्ण मानव-जाति को अपने परिवार का ही सदस्य मानते हैं तो हम प्रत्येक मनुष्य से मित्रवत् पेश आएं और सभी की उतनी ही परवाह करेंगे जितनी कि हम अपने परिवार के किसी सदस्य की करते हैं, यही वसुधैव कुटुम्बकम् की मूल भावना है ।

• • •

एक लम्हा जीने दो बस, तुम उनको सिर्फ अपने लिए

सुनील कुमार छेडवाल

लेखापरीक्षक



हर रिश्ते की नींव है वो,
हमारे जीवन का आधार है ।
ये फूल - ये नदियाँ - ये सारी प्रकृति वही है,
उसके होने से ही होता - परिपूर्ण ये संसार है ।

कई रिश्तों को बांधती है एक डोर में वो,
उसके मुस्कुराने से ही महकते ये तीज-त्यौहार हैं ।
हर दर्द को खुद में समेट लेती है वो,
अपने दामन से बिखेरती बस वो स्नेह और प्यार है ।

स्नेह, दया, शक्ति, ममता - हर एक गुण की वो स्वामिनी है,
हर एक संकट का दमन कर दे - ऐसी प्रखर दामिनी है,
उसके बिना हर परिवार की तस्वीर अधूरी है,
माँ, बहन, बेटी, पत्नी के रूप में-करती हर तस्वीर वो पूरी है ।

हर एक आसमाँ उसका है,
आसमाँ से भी ऊँची उसकी उड़ान है ।
हर एक मुसीबत को पार करके आगे बढ़ना,
ये उसके हौसले की पहचान है ।

मोम सी जल-जलकर हर पल वो पिघलती है,
घोर अंधेरों में उसी रौशनी से ही - ये जिंदगी संभलती है,
बदलता है वक्त - बदलते हैं हम,
पर उसकी तकदीर कहाँ बदलती है ।

क्यूँ बाँधते हो बन्धनों में - स्त्री के संसार को ?
हो सके तो अपनी संतानों को उच्च संस्कार दो,
नारी को पूरा सम्मान दो - गर थोड़ी सी भी गैरत हो ।
समझ सकोगे क्या तुम - समझो गर तुम भी एक औरत हो ।

अपने त्याग और दर्द का करती नहीं वो ज़िंक्र कभी ।
संभालना है - संवारना है अपनों को,
लगी रहती उसको बस फ़ि़क्र यही ।
अपने अस्तित्व को मिटा कर भी - रखती वो हमको जिंदा है
जानकर भी सब कुछ, क्यूँ करते नहीं हम उसकी कद्र कभी ।

एक लम्हा जीने दो बस, तुम उनको सिर्फ़ अपने लिए,
ताकि प्यार कर सके वो खुद को ।
पर याद रखना, उस एक पल में भी,
वो खुद को मान लेगी तुमको ।

• • •

जीवन क्या है ?

सिमरन राठौर

सुपुत्री श्री छत्रपाल सिंह राठौर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



जीवन सुख दुःख का चक्र है । यही जीवन का सत्य है । हमारे साथ ही ऐसा क्यों ? इस प्रश्न का उत्तर हमें गीता से ही मिलता है । दुःख का प्रमुख कारण बाहरी परिस्थितियाँ, आसपास के व्यक्तियों का व्यवहार, महत्वाकांक्षाएं एवं कामनाएं हैं । जीवन में आई प्रतिकूल परिस्थितियों एवं समस्याओं के लिए कोई दूसरा व्यक्ति या भाग्य दोषी नहीं है, उसके लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं । हमारे कर्मों और व्यवहार की वजह से ही परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं । हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति का व्यवहार हमारे व्यवहार को प्रभावित न करे । हम अपने स्वभाव के अनुकूल क्रिया करें ।

‘मैं’, ‘मेरा’, ‘मेरे लिए’ शब्दों का कम से कम प्रयोग होना चाहिए । अभी कुछ कमी है और कुछ चाहिए यह सोचकर दुःख बढ़ता है । अपने काम और अपने कर्तव्यों का ठीक से निर्वहन ही चिंता के विषय हों, परिणाम नहीं । ऊर्जा का उपयोग काम में हो, परिणाम की व्यर्थ चिंता में नहीं । स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने में मन की शांति नहीं खोनी चाहिए । परिस्थितियाँ, लोगों का व्यवहार हम नहीं चुन सकते, पर कामनाओं पर नियंत्रण रख सकते हैं । हम तनाव या समस्या की उत्पत्ति का कारण जानें । उचित निवारण का प्रयास करें । तनाव, शरीर और मन के लिए

घातक है । जो बदला नहीं जा सकता, उसको स्वीकार करें, यही उपाय है । दूसरों को बदलना कठिन है, स्वयं को बदलने का प्रयास करें । सब मेरे ही हैं, यह सोचें । भूतकाल से शिक्षा लें, वर्तमान में जियें व भविष्य की चिंता न करें । व्यायाम, योग, प्राणायाम, ध्यान इत्यादि का अवश्य लाभ लें और ईश्वर को धन्यवाद दें । तभी बोलें जब उससे सुनने वाले का हित हो । अपशब्द ग्रहण न करें । स्वयं को सदा सकारात्मक सुझाव देते रहें । दुःख को शिक्षक समझें और उससे सीख लें । तनाव एवं समस्याओं का समाधान खोजते समय हमारा व्यक्तित्व निखरता है । ईर्ष्या, द्वेष, लोभ एवं अहम के दोषों से मन को विकृत करने के बजाय, अपनी जीवन शैली को बदल कर सेवा, सहकार, सौहार्द जैसे गुणों के सहारे मानसिक रोगों से बचा जा सकता है और मानसिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है ।

जिंदगी तुम्हें वो नहीं देगी जो तुम्हें चाहिए ।
जिंदगी तुम्हे वो देगी जिसके काबिल तुम हो ।

• • •

सिनेमा हॉल में राष्ट्रीयगान

संदीप कुमार बाजपेई

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अब हम सिनेमा हॉल में कोई फिल्म देखने जाते हैं तो फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रीयगान बजना शुरू होता है और लोग सम्मान में खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग जो अपनी सीट के रास्ते में होते हैं वो रास्ते में ही रुक जाते हैं। जब सिनेमा हॉल में राष्ट्रीयगान बजाना अनिवार्य करने का शासकीय आदेश आया तो मन में प्रश्न आया कि सिनेमा हॉल ही क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने पर ज्ञात हुआ कि वर्ष 2002 में मध्यप्रदेश के एक निवासी श्री श्याम नारायण चौकसे ने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि वर्ष 2001 में प्रदर्शित फिल्म 'कभी खुशी कभी ग़म' के एक दृश्य में राष्ट्रीयगान का अपमान हुआ है। साथ में श्री चौकसे ने यह भी शिकायत की कि जब फिल्म में राष्ट्रीयगान आया तो कुछ लोग सम्मान में खड़े नहीं हुए। 2003 में उच्च न्यायालय ने फिल्म निर्माता को संबन्धित दृश्य फिल्म से हटाने का आदेश दिया। हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय ने बाद में इस मामले पर स्थगन आदेश दे दिया।

2016 में श्री चौकसे की ही एक अन्य याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने सिनेमा हॉल में फिल्म के प्रदर्शन के पूर्व राष्ट्रीयगान बजाना अनिवार्य कर दिया। हालाँकि 2018 में सर्वोच्च न्यायालय

ने अपने 2016 के आदेश में संशोधन करते हुए आदेश दिया कि सिनेमा हॉल मालिकों के लिए राष्ट्रीयगान बजाना अनिवार्य नहीं है एवं राष्ट्रीयगान बजाना है या नहीं यह निर्णय सिनेमा हॉल मालिकों के ऊपर ही छोड़ दिया। यद्यपि अहमदाबाद के अधिकांश सिनेमा हॉल अब भी फ़िल्म शुरू होने के पहले राष्ट्रीयगान बजा रहे हैं।

1960 के दशक में भी सिनेमा हॉल में फ़िल्म ख़त्म होने के बाद राष्ट्रीयगान बजाने का नियम था लेकिन यह फ़िल्म समाप्त होने के बाद बजाने के कारण लोग पहले ही निकल जाते थे, इसलिए यह व्यवस्था बंद कर दी गयी।

निःसंदेह राष्ट्रीयगान के बजने पर खड़े होना एवं राष्ट्रीयगान के प्रति सम्मान प्रकट करना मात्र आवश्यक ही नहीं वरन हम सबका स्वाभाविक व्यवहार भी है एवं जनमानस में गर्व की अनुभूति कराता है। जो लोग उस समय सिनेमा हॉल के अंदर होते हैं, निश्चित रूप से राष्ट्रीयगान बजाए जाने पर राष्ट्र के विषय में कुछ क्षण तो अवश्य ही सकारात्मक रूप से सोचते होंगे।

हमारे देश के संविधान का अनुच्छेद 51 (क) कुछ मूलभूत कर्तव्य निर्धारित करता है जिनमें राष्ट्रीयध्वज एवं राष्ट्रीयगान का सम्मान करना भी सम्मिलित हैं।

गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार निम्नलिखित नौ मौकों पर राष्ट्रीयगान बजाना आवश्यक होता है :

1. नागरिक तथा सैन्य समारोह
2. राष्ट्रपति या संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के अंदर राज्यपाल/उप राज्यपाल को नेशनल सैल्यूट दिये जाने पर
3. परेड के समय

4. भारत सरकार द्वारा आयोजित औपचारिक कार्यक्रमों और अन्य कार्यक्रमों में राष्ट्रपति के आगमन या प्रस्थान के समय
5. आकाशवाणी पर राष्ट्रपति के राष्ट्र को सम्बोधन से पूर्व और उसके पश्चात्
6. संबन्धित राज्य के औपचारिक कार्यक्रमों में राज्यपाल/उप राज्यपाल के आगमन या प्रस्थान के समय
7. राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगे' को परेड में लगाने के समय
8. सेना की रेजिमेन्ट के रंग प्रस्तुत किए जाने के समय
9. भारतीय नौसेना के रंगों को फहराने के समय

कोई भी राष्ट्रीय प्रतीक चाहे वह राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीयगीत या राष्ट्रीयगान हो, हम सबके अंदर एक गर्व एवं देशभक्ति की अनुभूति जगाता है। बचपन से देखा है, सभी स्कूलों में प्रार्थना सभा के अंत में राष्ट्रीयगान गाया ही जाता है। हालांकि इंटरमीडिएट के बाद कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर तक पहुँचते-पहुँचते प्रार्थना तथा उसके अंत में राष्ट्रीयगान की प्रथा लुप्त सी हो जाती है।

ज्यादा पुरानी बात नहीं है, वर्ष 2016 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ बैठक में यह निर्णय लिया गया कि छात्रों में राष्ट्रभक्ति एवं गर्व का संचार करने के लिए सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में 207 फीट ऊँचा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा।

उच्चतम न्यायालय द्वारा दिये गए निर्देश के अनुरूप जब सिनेमा हॉल में मात्र मनोरंजन के लिए गए हुए लोगों के लिए राष्ट्रीयगान बजाया जाता है ताकि देशभक्ति की भावना बढ़े, तो फिर अन्य क्षेत्रों के लोगों को इस प्रकार की व्यवस्था से सर्वथा अछूता रखना उचित प्रतीत नहीं होता।

तेलंगाना के करीमनगर ज़िले में जमीकुंटा नामक एक गाँव है, जहाँ प्रतिदिन लाउडस्पीकर पर राष्ट्रीयगान बजाया जाता है एवं गाँव में उपस्थित लोग राष्ट्रीयध्वज के समक्ष एकत्रित होकर राष्ट्रीयगान गाते हैं। इस गाँव के लोगों का यह स्वतःस्फूर्त प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

यदि सार्वजनिक क्षेत्र पर दृष्टि करें तो केन्द्र सरकार के कार्यालय, राज्य सरकार के कार्यालय, स्थानीय सरकार, इन तीनों के अंतर्गत आने वाली स्वायत्त संस्थाएं, सार्वजनिक उद्यम इत्यादि में कुल मिलाकर लाखों कर्मचारी कार्य करते हैं, जिनके अंदर देशभक्ति तथा देश के प्रति उत्तरदायित्व की भावना बढ़ाना तथा उन्हें गर्व का बोध करवाना भी मेरे विचार में अत्यंत आवश्यक हैं। राष्ट्रीयगान के साथ कार्य प्रारंभ करने से देशभक्ति एवं अपने कार्य के प्रति गर्व बोध बढ़ेगा एवं कार्य संस्कृति में भी सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

प्रतीक्षा है कि कब उच्चतम न्यायालय या सरकार का ध्यान इस बात की तरफ जाए और राष्ट्रीयगान के साथ कार्यदिवस की शुरूआत करना सभी सरकारी कार्यालयों में अनिवार्य कर दिया जाए। आखिरकार अपने कार्य समय में से मात्र 52 सेकंड निकालकर देश को याद करने की बात है। यहाँ तक की सम्पूर्ण संगठित क्षेत्र, सार्वजनिक या निजी, में इस व्यवस्था को समान रूप से लागू किया जा सकता है।

राष्ट्रीयगान के लिए स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस की तरह एक स्थान पर एकत्रित होने की भी आवश्यकता नहीं है। अधिकांश कार्यालयों में पब्लिक एड्रेस सिस्टम होता ही है।

बाकी, जहाँ चाह वहाँ राह....

• • •

नैनीताल की यादें

हिमांशु एस. वर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नैनीताल भारत के उत्तराखण्ड राज्य का एक प्रमुख पर्यटन नगर है। इसे झीलों का शहर कहा जाता है क्योंकि यह पूरी जगह झीलों से घिरी हुई है। इनमें से सबसे प्रमुख झील 'नैनी झील' है जिसके नाम पर इस जगह का नाम नैनीताल पड़ा है। 'नैनी' शब्द का अर्थ है आँखें और 'ताल' का अर्थ है झील।

कई वर्षों तक नैनीताल के बारे में सुनने के बाद मन में नैनीताल घूमने की बहुत इच्छा थी। शादी के छः वर्ष बाद तक जब भी हम अपने गृहनगर बरेली जाते तो हर बार नैनीताल घूमने की योजना बनाते थे। किन्तु किसी न किसी कारण से यह योजना चौपट हो जाती थी, किन्तु इस बार मन में ठान लिया था कि इस बार तो पक्का नैनीताल घूम कर ही लौटूंगा।

अहमदाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस से चौबीस घंटे का सफ़र करने के बाद हम बरेली पहुँचे। आयोजन के हिसाब से पाँच दिनों की छुट्टी व आगे-पीछे की शनिवार-रविवार की छुट्टियाँ मिलाकर कुल नौ दिनों में अहमदाबाद वापस आना था। दो दिन ससुराल में रिश्तेदारों को मिलने के बाद तीसरे दिन मैं, मेरी पत्नी, बेटा, बेटी, साला और साले की पत्नी तैयार होकर, जो टैक्सी बुक की थी, उसमें सुबह सात बजे के करीब नैनीताल के लिये निकल पड़े। नैनीताल का सफ़र पहली बार होने के कारण मैंने ड्राइवर को पहले ही बता दिया था कि उसे जो रास्ता सही लगे उस रास्ते से ले जाए, पर नैनीताल के सभी घूमने लायक स्थल ज़रूर घुमाए।

सड़क मार्ग द्वारा बरेली से नैनीताल लगभग 145 किलोमीटर दूर है। हम ए.सी. टैक्सी द्वारा लगभग 3 घंटे का सफ़र करने के पश्चात् काठगोदाम पहुँचे और काठगोदाम से थोड़ी चढ़ाई करने के बाद ड्राइवर ने चाय-नाश्ता करने के लिये कार को एक रेस्टोरेन्ट के सामने खड़ा कर दिया। चाय-नाश्ता करने के पश्चात् हमने फिर पहाड़ की चढ़ाई शुरू कर दी। लगभग एक घंटे में टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर नागिन सी चल रही कार का और हरे-भरे पहाड़ों का मज़ा लेते हुए, 12 बजे के करीब हम नैनीताल पहुँच गए।

अप्रैल के महीने में नैनीताल में गर्मी तो थी, पर उतनी नहीं जितनी हम अहमदाबाद में अनुभव करके गये थे। नैनीताल में हमने रुकने के लिये पहले से ही, झील का नज़ारा दिखे, ऐसे दो कमरे होटल 'पर्यटक' में बुक करवा लिये थे। होटल से नैनीझील व खूबसूरत हरे-भरे पहाड़ों का नज़ारा देखते ही बनता था। करीब दो घंटे आराम करने के पश्चात् हम टैक्सी द्वारा घूमने निकल पड़े। सबसे पहले हम नैनादेवी मंदिर पहुँचे। यहां सती के शक्ति रूप की पूजा की जाती है। मंदिर में दो नेत्र हैं जो नैना देवी को दर्शाते हैं। नैनी झील के बारे में माना जाता है कि जब शिव सती के मृत शरीर को लेकर कैलाश पर्वत जा रहे थे, तब जहाँ-जहाँ उनके शरीर के अंग गिरे, वहाँ-वहाँ शक्तिपीठों की स्थापना हुई। नैनी झील के स्थान पर देवी सती की आँख गिरी थी, इसी से प्रेरित होकर इस मंदिर की स्थापना की गई। मंदिर में दर्शन करने और फ़ोटो लेने के बाद, मंदिर के निकट ही एक छोटे से मार्केट से हम लोगों ने बच्चों के लिये गर्म कपड़े लिये क्योंकि वहाँ का मौसम अचानक बदलने लगा था और हम अपने साथ गर्म कपड़े नहीं ले गये थे। शॉपिंग करने के बाद जैसे कि आदत है शाम को चाय पीने की, हमने कुल्हड़ की चाय ली। चाय पी ही रहे थे कि अचानक बारिश की बूँदें गिरने लगीं। हमने सोचा कि अब तो कहीं नहीं घूम पायेंगे, किन्तु ड्राइवर ने कहा कि रेस्टोरेन्ट में बैठकर कुछ गरमा-गरम नाश्ता कर लो तब तक बारिश भी बन्द

हो जायेगी । हमने समय खराब किये बिना चाय के साथ आलू के परांठे और पकौड़ों का ऑर्डर दे दिया और बरसात का लुत्फ़ उठाया । लगभग आधे घंटे में बारिश भी बन्द हो गयी । फिर हम वहाँ से ही हनुमानगढ़ी मंदिर के लिये रवाना हो गए ।

हनुमानगढ़ी मंदिर के निर्माण के बारे में ड्राईवर ने बताया कि पहले वहाँ घना जंगल था । जंगल में एक मिट्टी का टीला था, जिसके पास बैठकर बाबा नीम करोली ने एक साल तक राम नाम जपा था । यह सब देखकर वहाँ मौजूद पेड़-पौधे भी भगवान राम का नाम जपने लगे । यह अद्भुत दृश्य देखकर बाबा ने कीर्तन कराया । कीर्तन समाप्त होने के बाद भंडारा कराया, परंतु प्रसाद बनाते समय घी कम पड़ गया तो बाबा ने पानी के एक कनस्तर को कढ़ाई में डाल दिया और पानी डालते ही, पानी घी में परिवर्तित हुआ, चमत्कार हो गया ! यह कहानी सुनकर हम सब चकित हो गये । हमने हनुमानजी के दर्शन किये, नीम करोली बाबा द्वारा स्थापित रामधून कक्ष में लगभग दस-पंद्रह मिनट बैठकर हम टैक्सी की तरफ़ चल पड़े । शाम के लगभग सात बज चुके थे । पहाड़ों से ठंडी-ठंडी हवायें चलनी शुरू हो गयी थी । तापमान में भी काफी गिरावट आ गयी थी । हमने अब टैक्सी सीधा माल रोड के पास पार्क करवायी और माल रोड की सैर शुरू कर दी । वैसे माल रोड से शॉपिंग का कोई इरादा तो था नहीं, क्योंकि पर्यटक स्थल पर लगभग हर चीज़ महंगी होती है और हमारा इरादा तो मात्र नैनीताल के सभी पर्यटक स्थलों को घूमने का था । किन्तु आप अपने परिवार के साथ जाओ और बिना शॉपिंग किये वापस आओ, ये तो मुमकिन ही नहीं है । माल रोड पर चलते-चलते लगभग एक घंटा शॉपिंग करने के पश्चात् अब पैर जवाब दे रहे थे और भूख भी लग रही थी । माल रोड पर ही हम सबने खाना खाया और होटल वापस पहुँच गये । ए.सी. नहीं होते हुए भी कमरे इतने ठंडे हो चुके थे मानो टर्बो मोड पर ए. सी. चला रखा हो । थकान काफी हो चुकी

थी, ड्राईवर ने अगले दिन घूमने का रूट बनाया और सुबह जल्दी उठने को कहा ।

दूसरे दिन हम सभी लगभग छः बजे उठ गये । जैसे ही कमरे का दरवाज़ा खोला, बड़ी ठंडी हवा चल रही थी, तापमान लगभग 11 डिग्री रहा होगा । मन तो और सोने को कर रहा था पर रूम से नैनीझील का दृश्य देखकर ये सोचा कि सोना तो जिंदगी भर है, घूमने आये हैं तो पहले घूम लिया जाये । सात बजे के लगभग हम सब तैयार हो गये । हम फिर से नैनादेवी मंदिर गये, दर्शन किए और वहीं पास में नैनीझील में बोटिंग का आनंद लिया । लगभग आधा घंटा बोटिंग करने के पश्चात् हम प्रकृति का आनंद लेने के लिये नैनीताल की चोटी की तरफ़ बढ़े । वहीं कुछ दूरी पर कार पार्क करने के बाद, स्थानीय लोगों की मदद से दूरबीन द्वारा दूर-दूर के चार-पाँच स्थल देखे । बाद में हम चिड़ियाघर और वन विभाग द्वारा संचालित एक झरने पर भी घूमने गये । इन दोनों जगहों पर बच्चों को बहुत ही आनंद आया, खासकर झरने के ठंडे-ठंडे पानी में तो हम सभी को बहुत ही आनंद आया । घूमते-घूमते लगभग दोपहर के दो बज चुके थे और अब हम लोग भी काफी थक चुके थे । रास्ते में ही रेस्टोरेन्ट में खाना खाने के बाद हम होटल पहुँचे और दो-तीन घंटे आराम करने के पश्चात् अपना सामान और नैनीताल की यादें बटोर कर घर की तरफ़ चल दिये । नैनीताल में दो दिनों में ही हमने तीन ऋतुओं का अनुभव कर लिया । घूमने का मज़ा तभी है जब आप किसी अनुभवी की सलाह पर पूरी यात्रा की तैयारी करके नैनीताल पहुँचे, वरना होटल, टैक्सी और गाइड के चक्कर में ही समय और पैसा बर्बाद होगा । नैनीताल की यह यात्रा मुझे जिंदगी भर याद रहेगी । आशा करता हूँ कि आप सभी जो घूमने के शौकीन हैं, एक बार कम से कम दो दिनों के लिये नैनीताल (उत्तराखंड) की सैर जरूर करेंगे ।

• • •

अपेक्षा

हिमांशु धर्मदर्शी

प्रधान महालेखाकार

Baby's day out फिल्म याद है ?

एक छोटा सा बच्चा है, जो अपने घर से बाहर निकल पड़ता है शहर की सैर करने !

उसके हर कदम पर हमारी सांस रूक जाती है,

कभी वह किसी लंबे ट्रक के पहियों के बीच से निकल कर सड़क पार कर लेता है तो कभी किसी इमारत की पच्चीसवीं मंज़िल पर पहुँच जाता है । कभी वह किसी महिला के शॉपिंग बैग में बैठ कर बाज़ार से भाग निकलता है और कभी चिड़ियाघर पहुँच जाता है ।

लेकिन हर बार वह बदमाशों के शिकंजे से बच निकलता है ।

जो चीज़ मेरे दिल को छू लेती है, वह है हर समय, हर पल, हर वक्त उसका खिलखिलाता और मुस्कुराता चेहरा !

कहानी कुछ जानी पहचानी नहीं है ?

कहानी Hollywood की है, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि में हम विष्णु पुराण की एक कहानी पढ़ सकते हैं, वहाँ भी एक बालक है, जिसे बार-बार मारने की कोशिश होती रही ।

उसे विष दिया गया,

उस पर तलवार से प्रहार किया गया,
विषधरों के सामने छोड़ा गया,
हाथियों के पैरों तले कुचलवाने के प्रयास हुये,
पर्वत से नीचे बेतवा नदी में धकेल दिया गया,
हर बार वह बच गया ।

आखिर उसे अग्नि में जलाने के लिए बिठाया गया, लेकिन फिर भी वह बच निकला । हर समय, हर पल वह मुस्कुराता रहा ! उसे हल्की सी खरोंच तक नहीं आई ।

ऐसा क्यों ?

शायद इसलिए कि दोनों बड़े ही निर्दोष, स्वच्छ, पवित्र हैं । कहीं कोई मलिनता का नामोनिशान नहीं । दोनों ही कहानियों में बच्चे अपने आप में मस्त हैं ।

एक को तो पता ही नहीं है कि उसे अगवा कर लिया गया है ।

उसे ऐसा लग रहा है जैसे वह रोज़ की तरह शहर की सैर पर निकला है । घर से दूर है, अपनों से दूर है और महानगर में असुरक्षित भी है, लेकिन इन सारी बातों से वह बेखबर है । अपने आनन्द में मस्त है ।

दूसरा अपनी भक्ति में तल्लीन है । अपने ही पिता द्वारा मृत्यु दंड मिलने पर भी अविचलित है । जीवन में आने वाली हर कठिनाई को बड़े सरल भाव से, सहजता से स्वीकार कर रहा है ।

हम सब जब बच्चे थे, कभी ऐसे ही थे । जब से हमने होश संभाला, या यूँ कहिए कि खोया, तब से हमने परिस्थिति से डरना शुरू कर दिया । अब हमने परिस्थिति को अपने सर पर चढ़ा रखा है । वह हमें जीने नहीं देती और हम उसे सर से उतारना नहीं चाहते ।

हम अपनी ही पैदा की हुई समस्या के शिकार हैं । वास्तविकता और अपेक्षा के बीच का अंतर मतलब, समस्या ।

अंतर जितना बड़ा, समस्या उतनी ही बड़ी । वास्तविकता और अपेक्षा, जिस दिन दोनों एक दूसरे से मिल जायें तो कोई समस्या ही नहीं रहेगी । मन संतोष से परिपूर्ण हो जाएगा ।

बचपन सुहाना था, जब छोटे थे, तब अपेक्षा भी छोटी रहती थी...

अपेक्षा बस अड्डे पर, गांधीनगर की बस पर बैठने से पहले, एक चॉकोबार आइसक्रीम होती थी ।

अपेक्षा होती थी,

किसी मेले में बंदूक से गुब्बारों को फोड़ने की,

दिवाली में ढेर सारे पटाखों की,

उत्तरायण पर बहुत सारी पतंगे काटने की ।

बड़े होने पर अब अपेक्षा भी बड़ी होने लगी, अपेक्षा को हाथ में पकड़ सकते थे, रेनॉल्ड्स की नई बॉलपेन...

अपेक्षा चंद लम्हे होते थे, पहली बारिश के बाद, गांधीनगर के पानी भरे रास्ते पर साइकिल चलाने के...

अपेक्षा आसान होती थी, अशोक वृक्ष के सूखे पत्तों को जाड़े के मौसम में जलाना और देर तक दोस्तों से बतियाना

ओह ! अपेक्षा होती थी, दोस्तों के साथ साल में एक बार कहीं जंगलों में घूमना,

शुरू-शुरू में अपेक्षा कितनी कम रहती ! जितनी लंबी चादर थी, उतने ही पैर पसारते । धीरे-धीरे अंतर बढ़ता गया ।

अब अपेक्षा चंद्रमा की कला की तरह थी, एक आती, ढल जाती, दूसरी अपना सर उठाती, ढल जाती, छोटी-बड़ी, समय के साथ-साथ बदलती रहती...

आज अपेक्षा ऐसी नहीं रही, जिसे हम खा लें, या हाथ में पकड़ लें, कि पैरों से चला लें ।

बृहस्पति या शनि के आकाश में जैसे एक साथ अनेक चंद्रमा दिखाई देते हैं, वैसे ही कई सारी मनमानस में मंडराने लगीं । समस्याएं एक नहीं अनेक हो गई, अंतर चारों दिशाओं में फैल गया, जैसे उसे कभी मिटा नहीं सकते

•
•
•

कसूर किसका ?????

● ● ●



पिथोरा चित्रकला

‘पिथोरा’ चित्रकला एक प्रकार की पारंपरिक चित्रकला है जो अधिकांशतः मध्य गुजरात की राठवा, भील व नायक जनजाति के लोगों द्वारा दीवारों पर की जाती है । पिथोरा मात्र कला का एक रूप नहीं, अपितु एक अनुष्ठान भी है जो ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए या वरदान प्राप्त करने की इच्छा से किया जाता है । इस कला में समान्यतः प्रकृति के चित्रण का प्रयास नहीं किया जाता बल्कि किसी एक गुण को प्रधान मानकर किसी घोड़े या हाथी इत्यादि का चित्रण किया जाता है । इसी मुख्य गुण के अनुरूप भित्ति-चित्र की रचना की जाती है । ये भित्ति-चित्र अपरिष्कृत होते हैं पर इनका यही अपरिष्कृत रूप इनकी सुंदरता में चार चाँद लगा देता है ।



तरणेतर का मेला

तरणेतर, एक छोटा-सा सामान्यतः शांत गाँव है जो गुजरात के 'पांचाल' क्षेत्र में थानगाँव के निकट स्थित है तथा यहाँ आयोजित होने वाले वार्षिक त्रिनेत्रेश्वर महादेव के मेले के लिए प्रख्यात है । यह मेला त्रिनेत्रेश्वर मंदिर के पास आयोजित होता है तथा पर्यटकों के साथ-साथ समस्त क्षेत्र के लोगों को आकर्षित करता है । इस मेले में लगभग एक लाख लोग सम्मिलित होते हैं । यह मेला रंगों, जीवंतता, उत्साह व प्रार्थना का परिचायक है । यह मेला हर साल हिन्दू पंचाग के अनुसार भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, पंचमी और षष्ठी (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार अगस्त-सितंबर) के दौरान तीन दिन के लिए आयोजित होता है ।

